सितम्बर २००१ Rs. 10/-

चन्दामामा

Orissa
The Soul of India
Orissa :
beyond a poet's pen &
an artist's brush
सौन्दर्यशास्त्र जैसा सुन्दर और देशी तथा विदेशी तीर्थ स्थानों में स्थान पानेवाला पुरी में जगन्नाथ मंदिर है। जहाँ का रथ यात्रा नामक पर्व बड़े धूम-धाम से मनाया जाता है। 'चिलिका झील संगीत और कल्पना के साथ शोभायमान हो रही है। इस झील में आनेवाले पर्यटक पक्षियों का धन्यवाद है कि उनसे यहाँ का सौन्दर्य और बढ़ जाता है। नीले सागर की ऊँची-नीची लहरे जब आकर किनारों से टकराती हैं तो यह सुन्दर उड़ीसा का दृश्य बोल उठता है। कलाकृतियों और संस्कृति का खजाना, चाहे वह हाथ से बनाया गया पिपली हो या छाऊ और ओडिसी नृत्य हो, ये सब उड़ीसा के बारे में जिज्ञासा पैदा करते हैं। उड़ीसा आपके जीवन का एक अंग है, इसे हाथ से जाने नहीं दीजिए।
ORISSA
TOURISM
For more information contact: Director, Tourism, Paryatan Bhavan, Bhubaneswar-751014, Orissa, India
Tel: (0674) 432177, Fax: (0674) 430887, e.mail:oritour@cte.vsnl.net.in, website:www.orissa-tourism.com
Tourist Offices at: Chennai: 42/18, Mount Road, (2nd Floor), Gee Gee Complex, Pin-600002, Telefax: (044)8534090
Calcutta: Utkal Bhawan 55, Lenin Sarani, Pin-700013, Tel: (033) 2443653
New Delhi: Utkalika, B/4 Baba Kharak Singh Marg, Pin - 110001, Telefax (011) 3364580
Visit
Konark Festival
December, 1-5

आपके लिए एक प्रशनोत्तरी!

भुवनेश्वर का सौंदर्य

भारत के मंदिरों के शहर भुवनेश्वर में आपका स्वागत हैं, जहाँ आपको देखने के लिए मिलेमें ५०० से भी अधिक सुन्दर मंदिर।

यह कहा गया है कि यह तीर्थस्थान बिन्दुसागर झील में डुबोकर बना है। इन झील के बारे में एक कथा है कि एक बार देवी पार्वती जंगल में घूम रही थी तो उन्हें प्यास लगी। तो शिव भगवान ने शे भारत की नदीयों और झीलों से लाए गए पानी से उसे भर दिया।

इस शहर का सबसे बड़ा मंदिर लिंग राज हो। ग्यारहवों शताब्दी में बना यह मंदिर भगवान शिव का हो ४६ मीटर ऊँचा यह मंदिर उडिसा का सबसे ऊँचाई वाला मंदिर है।

मुक्तेश्वर मंदिर पत्थरों का एक सुन्दर नमूना हो। यह बहुत ही सुन्दर तरीके से बनाया गया है जिसका द्वार काफी भव्य है। इसकी कलाकृदि आँखो को आर्कषित करती है। लिंगराज मंदिर से कुछ दूरी पर ही किलों का शहर सिुपालगढ है। जो तीसरी शताब्दी में पाया गया था।

धोली शहर से ८ कि.मी. दूर है। यह वही स्थान है जहाँ सम्राट अशोक ने बौद्ध प्राप्त किया था।

धौलगिटी पहाड़ी पर एक सुन्दर चिन्ह है जो रक्तभरित कलिंग युद्ध का प्रतिक है। शहर से कुछ ही दूरी पर खाव्डी की गुफाएँ और उदयगिरी क़ी गुफाएँ जो जैन संस्कृति से जुडे हैं।

आपके लिए एक प्रशनोत्तरी!
१४ वर्ष के बच्चों के लिए।

१. भुवनेश्वर से निकट वह कौन-सा शहर है जो अपनी कला के लिए जाना जाता है?

---

२. इन गुफाओं में शास्दीप नृत्य की मुद्राओं बाली की प्रतिभाएँ बनायी गई हैं। बे गुफाएँ कौन सी हैं।

---

३. भुवनेश्वर के साथ बे दोनों शहरों में ऊडीसा के तीन बड़े मंदिर है। बे दोनों शहर कौन से है?

खाली स्थान पर आपके उत्तर लिखिए की इस कूपन को भरकर हमें भेजिए इस पत्ते पर

Orissa Tourism Quiz Contest
Chandamama India Limited
No.82, Defence Officers Colony
Ekkatuthangal, Chennai - 600 097.

नाम : ....

आयु : ....

पता : ....

....

पिन: ....फोन: ....

Winners picked by Orissa Tourism in each contest will be eligible for 3-days, 2-night stay at any of the OTDC Panthanivas, upto a maximum of four members of a family. Only original forms will be entertained. The competition is not open to CIL and Orissa Tourism family members. Orissa Tourism, Paryatan Bhaven, Bhubaneswar - 751 014. Ph : (0674) 432177, Fax : (0674) 430887, e-mail : ortour@sancharnet.in. Website : Orissa-tourism.com

विशेष आकर्षण

सम्पुट - १०५ सितम्बर - २००१ सञ्चिका - ९

भारत की गाथा २९

संगीत पुष्प १९

उचित भेंट ४६

विधाता और ब्राह्मण ३६

अन्तरङ्गम्

SUBSCRIPTION

For USA and Canada
Single copy $2
Annual subscription $20
Remittances in favour of
Chandmama India Ltd.
to
Subscription Division
CHANDAMAMA INDIA LIMITED
No. 82, Defence Officers Colony
Ekkatuthangal, Chennai - 600 097
E-mail : subscription@chandamama.org

शुल्क

सभी देशों में एयर मेल द्वारा
बारह अंक ९०० रुपये
भारत में बुक पोस्ट द्वारा १२० रुपये
अपनी रकम डिमांड ड्राफ्ट या
मनी-ऑर्डर द्वारा
'चंदामामा इंडिया लिमिटेड'
के नाम भेजें।

संस्थापक
चक्रपाणि, बी. नागि रेड्डी

भूत से ही भविष्य का संबंध

जापान की एक शिक्षा पत्रिका में कहा गया है कि बच्चों को बिना माचिस के आग जलाना सिखाईए। इससे वे संग्रहालयों तथा अपनी पाठ्य पुस्तकों द्वारा दिए जानेवाले ज्ञान से कहीं अधिक और जल्दी अपने इतिहास को समझ सकेंगे। उस देश के अध्यापक प्रकृति और संग्रहालयों में रखी गई विचित्र तथा अन्य वस्तुओं का सही उपयोग कर नए तरीके से शिक्षा देते हैं।

ये कोई ऐसी किताबें नहीं हैं जिसमें हजारों शब्द छपे हों और नहीं ये निन्दा करनेवाली पुस्तकें हैं। यदि वे पुस्तकें बच्चों में रुचि पैदा करने में असफल रहीं तो उस पुस्तक को बनानेवाले तथा उन पुस्तकों को दोषी नहीं माना जायेगा। हम लोग यह सोचना ही भूल गए कि हमारे पास वे भी स्रोत हैं जहाँ से हमारे बच्चे सूचनाएँ, और हर ज्ञान सीधे प्राप्त कर सकते हैं।

हम लोग लगभग अपनी संस्कृति से तो कट ही गए हैं और प्रकृति से भी। भारत जैसे विशाल देश का प्रत्येक प्रांत किसी-न-किसी वस्तु के लिए प्रसिद्ध है और उस पर प्रत्येक प्रांत को गर्व होना चाहिए। हमारी यह अंतरसंस्कृति प्रथा ही विश्व में प्रसिद्ध है और विभिन्न प्रांतों के विभिन्न संगीत, नृत्य तथा कलाएँ हमें एक सूत्र में बाँधती हैं। यह कहा गया है कि आप जितनी यात्रा करते हैं उतना ही अलग-अलग स्थानों के निकट होते जाते हैं। हमारे पाठक अवश्य एक प्रकार की यात्रा का अनुभव करेंगे जब वे किसी नृत्य शैली, उत्सव तथा लोककला के बारे में पढ़ेंगे।

हमारे राष्ट्रपति और दार्शनिक डॉ. एस. राधाकृष्णन ने एक बार कहा था कि "एक छोटा-सा इतिहास बनने में शताब्दियाँ लग जाती हैं और सैकड़ों इतिहास मिलते हैं तो संस्कृति बनती है।"

प्रत्येक भारतीय को याद रखना चाहिए कि हमारी संस्कृति बहुत पुरानी है। और हमें भूत और भविष्य के इस संबंध को बनाए रखना चाहिए।

सम्पादक : *विश्वम*
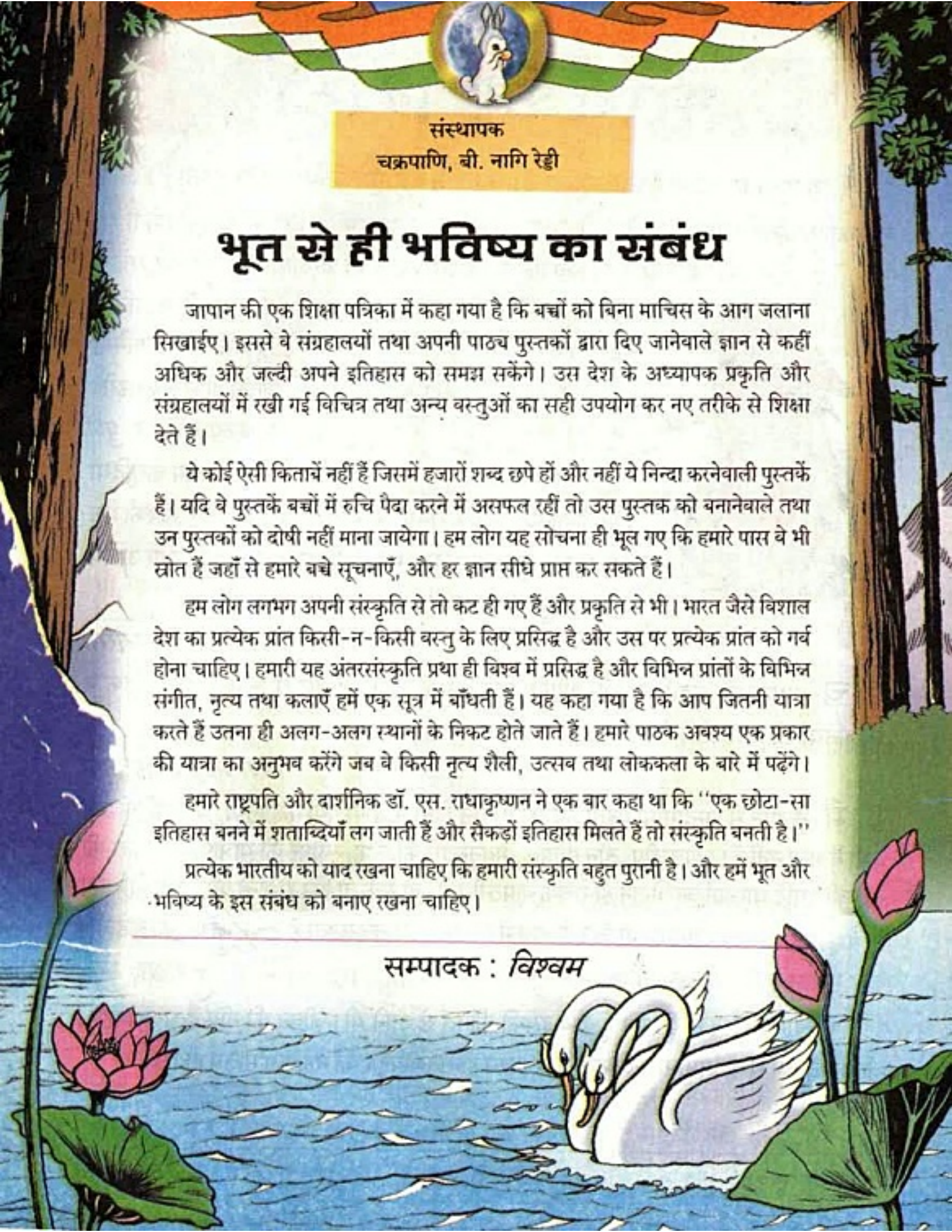
आपकी चिट्ठी

मैं 'चन्दामामा' बराबर पढ़ता आ रहा हूँ। सबसे अच्छी मुझे बेताल कथाँए लगती हैं। अन्य शीर्षकों के अंतर्गत प्रकाशित होनेवाले विषय भी मुझे भाते हैं। बच्चों के लिए वे बहुत उपयोगी हैं। कोई भी ऐसा मार्ग निकालिये, जिससे पाठक भी चन्दामामा में भाग ले सकें।

मैं पचीस सालों से चन्दामामा पढ़ रहा हूँ। इसमें छपी कहानियाँ दिलचस्प व शिक्षा-प्रद लगती हैं। परंतु आजकल कम कहानियाँ छापी जा रही हैं। कहानियों की संख्या, जितनी हो सके बढ़ाइये।

- कल्पना आत्रे, पुणे

पाठकों की मांग पर आपने अन्य शीर्षकों को कम कर दिया और कहानियाँ अधिक संख्या में छाप रहे हैं। इसके लिए आपको मेरा धन्यवाद। जुलाई का चन्दामामा बढ़िया है। यक्ष पर्वत और अजय गरूड़ा बहुत ही रोचक हैं।

- कृष्णमोहन, इटारसी

चन्दामामा की कहानियाँ और शीर्षक दिलचस्प हैं। और अच्छी से अच्छी धारावाहिक व कहानियों को जगह दीजिये।

- रमेश भल्ला, अहमदनगर

मैं बचपन से चन्दामामा पढ़ता आ रहा हूँ। उन दिनों में छापी गयी कहानियाँ, धारावाहिक अब भी मैं भूला नहीं हूँ। ज्वालाद्वीप, तीन मांत्रिक, भुवनसुंदरी की कथा, रूपधर की यात्राएँ, गंधर्वराजा की पुत्री आदि धारावाहिक कितने ही रोचक व पठनीय थे। हो सके तो फिर से उन्हें प्रकाशित कीजिये। चन्दामामा जैसे ही हाथ में आता है, मैं पढ़ने लगता हूँ २५ साल पूर्व की कहानी।

- शेखर, मेरठ.

चन्दामामा तब से पढ़ रहा हूँ, जब इसकी कीमत छे आने थी। जीवन की नींव है सद्व्यवहार। नियमित रूप से चन्दामामा पढ़नेवालों को अवश्य ही सद्व्यवहार की महानता मालूम होगी।

- काशीराम, जबलपुर.

छूटा अज्ञान

रामपुर नामक एक गाँव में रणधीर नामक एक किसान रहा करता था। थोड़ी-बहुत सी जो ज़मीन थी, उसमें वह खुद हल चलाता और आराम से जिंदगी गुज़ार रहा था।

एक दिन राजगढ़ से रणधीर का ससुर गोविंद दूध देनेवाली एक भैंस ले आया। उसने अपने दामाद रणधीर से कहा ''बहुत ही अच्छी तरह तुम खेती कर रहे हो। साथ ही दूध देनेवाले पशुओं का होना तुम्हारे लिए और अच्छा साबित होगा। कहते हैं कि फ़सल दूध का भाई है। आजकल मेरे पास बड़ी पशु-संपदा है। इसीलिए दूध देनेवाली एक भैंस तुम्हारे लिये ले आया हूँ। फ़सल के साथ-साथ दूध-दही का भी आनन्द लूटो !''

अपने ससुर की बातों पर रणधीर ने हंसकर कहा ''दूध देनेवाली भैंस का पेट भरना कोई आसान काम नहीं है। उससे सुख तो अवश्य ही प्राप्त होता है, परंतु साथ ही साथ उसे सही चारा खिलाया न जाए तो दुःख भी झेलना होगा। खेत में जो फ़सल हो रही है, उससे मेरी जिंदगी आराम से कट रही है। सूखी घास मेरे बैल के लिए काफ़ी पड़ती है। अब इस भैंस की वजह से शायद मुझे दिक्कत होगी। दूध-दही से सुख तो मिलेगा ज़रूर, पर इसे चराने की इसकी देखबाल करने की ताकत मुझमें नहीं है।''

तब उसकी पत्नी मंगला ने दखल देते हुए कहा ''आप आजकल सनकी होते जे रहे हैं। बैलों के साथ-साथ इसे भी चरायेंगे। लक्ष्मी दूध और फ़सल दोनों में निवास करती हैं। महालक्ष्मी की तरह घर में आयी इस भैंस को ठुकराइये मत। कहते हैं कि जच्चा और पशु के घर में आने से शुभ होता हैं।''

पत्नी और ससुर ने ज़ोर दिया तो रणधीर को उनकी बात माननी ही पड़ी। उसने अपने

- हेमलता पोडुवाल -
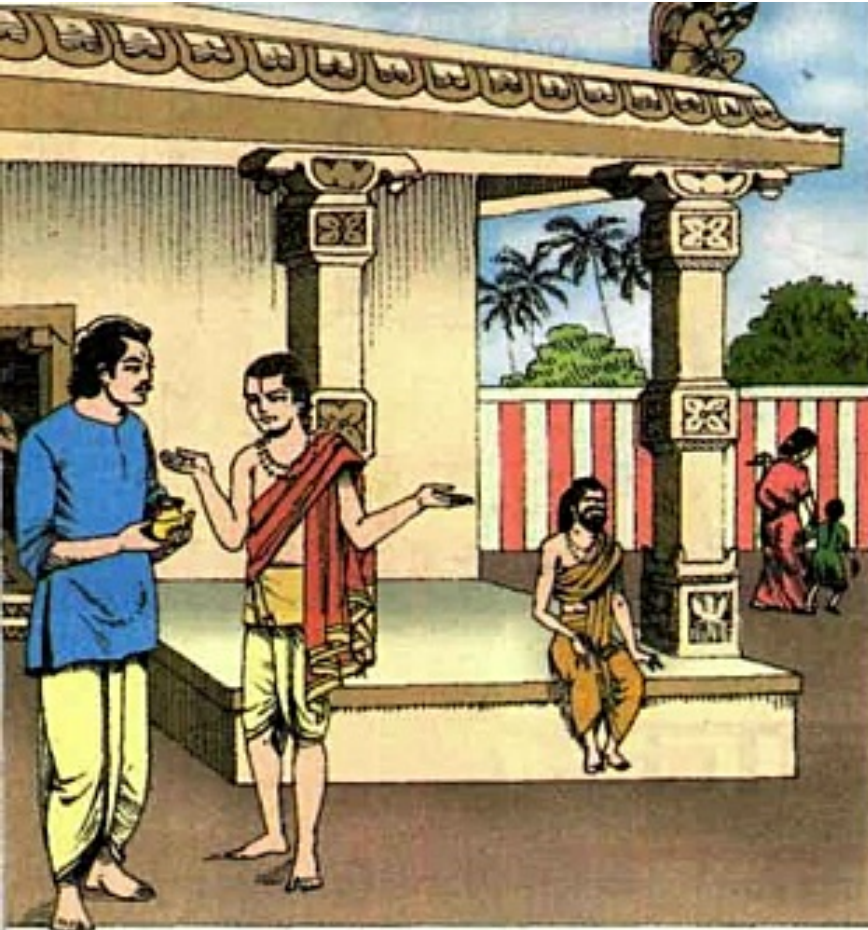
बैलों के साथ भैंस और उसके बच्चे को भी झोंपड़ी में बांध दिया।

गोविंद खुशी-खुशी राजगढ़ लौटा। वह खुश इसीलए था कि उसके दामाद ने उसकी बात मान ली। दूसरे दिन रणधीर दूध दुहकर ले आया तो उसकी पत्नी मंगला ने कहा ''पिताजी ने भैंस ले आकर हमारी बड़ी मदद की। आगे से दूध-दही की कोई कमी नहीं होगी। इस दुधार भैंस ने हमारी झोंपड़ी में पहली बार कदम रखा। इस अवसर पर यह दूध भगवान वेणुगोपालस्वामी को चढ़ायेंगे। हो सकता है, भगवान की कृपा से भैंसो के लिए एक और झोंपड़ी खड़ी करनी पड़े।'' कहकर उसने दूध के बरतन को आँखों से छुवा और पति के सुपुर्द किया।

रणधीर दूध का बरतन लिये मंदिर पहुँचा। उस समय पुजारी एक साधु से बातें करने में तल्लीन था। रणधीर ने पुजारी से आपने आने का कारण बताया।

पुजारी ने आश्चर्य भरे नेत्रों से रणधीर को देखते हुए कहा ''रणधीर, वेणुगोपालस्वामी को गाय का दूध और गाय के दूध से बनाये गये पदार्थ ही नैवेद्य के रूप में चढ़ाये जाते हैं। यही रीति चली आ रही है। अच्छा हुआ, तुमने पहले ही कह दिया कि यह भैंस का दूध है। नहीं तो मैं अनाचार कर बैठता। पर मैं तुम्हें निराश करना भी नहीं चाहता। तुम स्वंय भगवान को यह दूध नैवेद्य के रूप में समर्पित करो। पर एक काम करना। ये साधु कुंभमेला में जानेवाले हैं। रात को ये मंदिर के चबूतरे पर लेटे रहेंगे। वह दूध इन्हें समर्पित कर देना। इससे तुम्हें पुण्य मिलेगा।''

रणधीर ने बाहर ही खड़े होकर वेणुगोपालस्वामी को श्रद्धापूर्वक प्रणाम किया और दूध के बरतन को साधु के सामने रखा। साधु यह सब कुछ ध्यान से सुन रहा था। वह दूध को तुरंत पी गया और कहने लगा ''रणधीर, बिना शक्कर के ही दूध कितना मीठा है। अवश्य तुम्हारी भलाई होगी।'' कहते हुए उसने आंखों बंद कर ली और ध्यान लगाकर अपना हाथ हवा में छुपाया।

इसके बाद उसने अपनी मुट्ठी खोली। उसमें रूद्राक्ष के दो बीज थे। उन्हें रणधीर के हाथ में रखते हुए साधु ने कहा'' इन्हें अपने पूजा मंदिर में सुरक्षित रखना। तुम्हारे वंश का उद्धार

करनेवाले दो पुत्र जन्मेंगे।'' यों उसने उसे आशीर्वाद दिया।

घर लौटने के बाद रणधीर ने जो भी हुआ, पत्नी को सुनाया। दोनों ने मिलकर रूद्राक्ष के बीजों को पूजा मंदिर में सुरक्षित रखा। उस दिन से रणधीर का भाग्य चमका। थोड़े ही समय के अंदर उसने दो एकड़ उपजाऊ ज़मीन खरीदी, तीन दुधार भैंसे खरीदी और एक गाय भी। क्रमशः साधु के कहे अनुसार उसके दो पुत्र भी हुए।

परंतु दोनों बेटों के स्वभाव अलग-अलग थे। बड़े बेटे को खेती में लगाव था। वह रात-दिन खेत में ही रहकर खेती का काम करता था। साथ ही फ़सल के मामले में तरह-तरह के बीजों को प्रयोग में लाता था और अधिकाधिक फ़सल उगाने की कोशिश में लगा रहता था।

दूसरा बेटा पशुओं को बहुत चाहता था। उन्हें छोटी सी भी चोट लग जाए तो वह दुःखी हो जाता था। उसने पशु-वैद्यों से मिलकर तत्संबंधी रोगों के बारे में काफ़ी जानकारी प्राप्त की। वह इस जानकारी के सहारे पशुओं की चिकित्सा भी करने लग गया।

रणधीर और उसकी पत्नी मंगला को पक्का विश्वास हो गया कि यह सब कुछ साधु के दिये रूद्राक्ष बीजों की महिमा के कारण ही संभव हुआ। यों बहुत साल गुज़र गये।

रणधीर का बड़ा बेटा अब बीस साल का हो गया। संपन्न घरानों से विवाह-प्रस्ताव आने लगे। रणधीर और मंगला अपनी इस अच्छी स्थिति के कारक साधु को कृतज्ञता जताने दोनों बेटों को लेकर वेणुगोपालस्वामी के मंदिर गये।

पूजा समाप्त करके जैसे ही वे बाहर आये, उन्होंने मंदिर के सामने खड़े एक साधु को देखा।
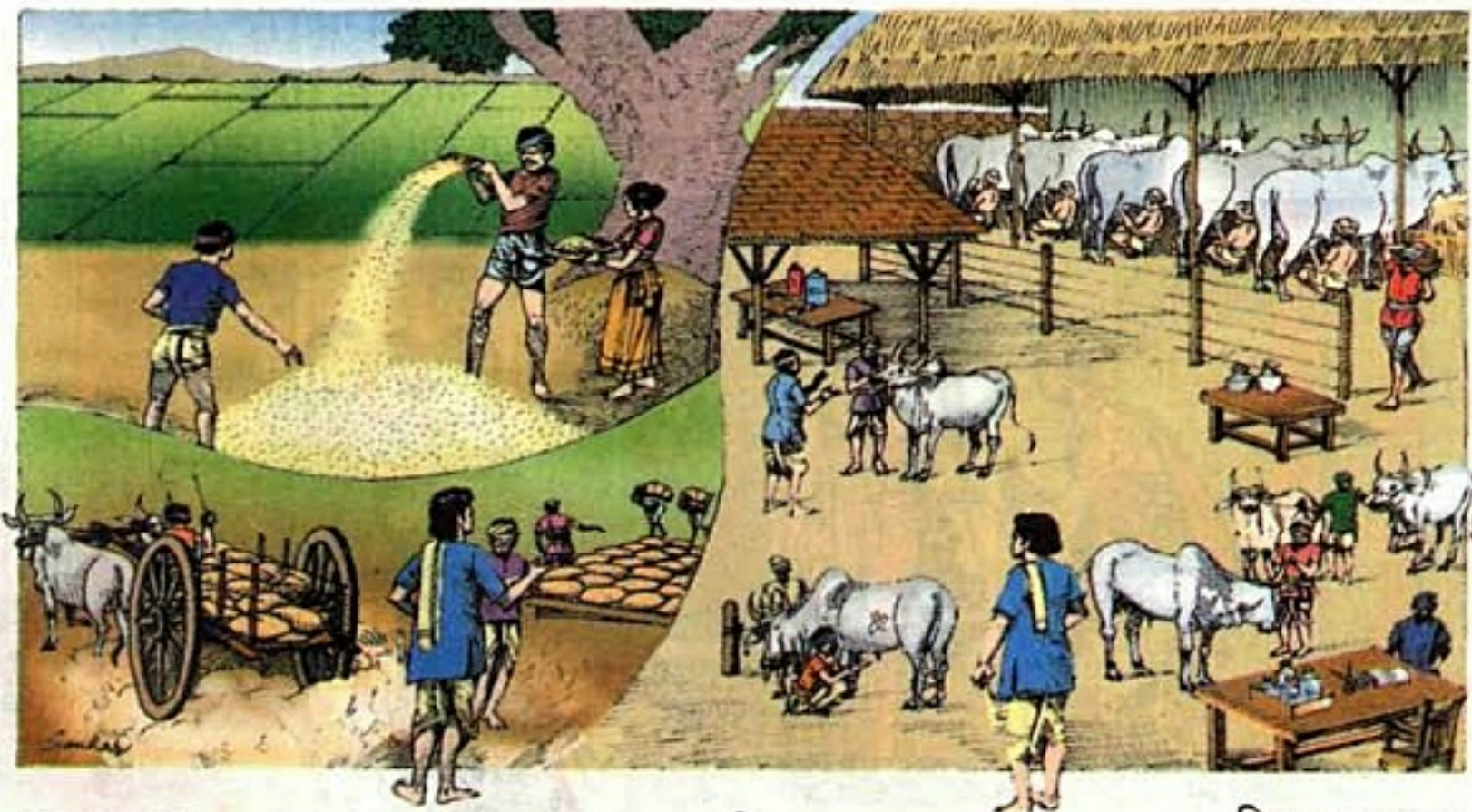
उसके सिर के बाल और दाढ़ी पूरे के पूरे पक गये थे। कमर झुकी हुई थी। रणधीर सोच में पड़ गया कि कहीं यह साधु वही है कि इतने में साधु ने मुस्कुराकर कहा ''रणधीर रात को जब मैं मंदिर के चबूतरे पर लेटा हुआ था तब मैने तुम्हारे बारे में गाँव के लोगों की कही बातें सुनी। बड़ा आनंद हुआ।''

अब रणधीर उस साधु को पहचान गया। उसने तुरंत कहा ''क्षमा कीजिये, स्वामी। आपके दिये रूद्राक्ष के बीजों व आपके आशीर्वाद से आज मैं संपन्न हुआ हूँ। अपने दोनों बेटों के साथ सुखी जीवन बिता रहा हूँ।'' कहकर दूध का बरतन साधु को देते हुए कहा ''स्वामी, यह गाय का दूध है। अभी-अभी इसी दूध को भगवान को नैवेद्य के रूप में चढ़ाकर ले आया हूँ।

साधु ने दूध के बरतन को बिना छुये ही कहा ''रणधीर, उस दिन जो हुआ, मुझे अच्छी तरह याद है। पुजारी का मानना था कि वेणुगोपालस्वामी केवल गायों के रक्षक हैं। उपके अज्ञान ने मुझे चकित कर दिया। इसी कारण जब वे तुम्हारी भैंस के दूध को स्वीकार करने से मना कर रहे थे, तब मैने लिया और पी गया। वे तुम्हारी श्रद्धा और भक्ति को समझाने में असफल हुए। मैं चाहता था कि तुम्हारे जैसे भक्त का शुभ हो, इसीलिए मैने तुम्हें रूद्राक्ष के दो बीज दिये। आशीर्वाद भी दिया। भगवान वेणुगोपालस्वामी ने मेरी बातों को सच साबित किया।''

उस समय लाठी के सहारे वहाँ पहुँचे बूढ़े पुजारी ने साधु को नमस्कार करके कहा ''स्वामी, यह जानते हुए भी कि भगवान सर्व-व्यापी हैं, अज्ञान के वश में आकर मैने ऐसा व्यवहार किया मानों मैं सर्वज्ञ हूँ, मानों मैं ही भगवान का एकमात्र प्रतिनिधि हूँ। मैं इस सत्य को भूल गया कि भक्त जो भी भक्तिपूर्वक देते हैं, उसे भगवान सहर्ष स्वीकार करते हैं और दुगुना उसे लौटाते हैं। अब मैं यह सत्य जान गया और मेरा अज्ञान दूर हो गया।''

साधु ने पुजारी के साथ-साथ सबको आशीर्वाद दिया और वहाँ से चला गया।
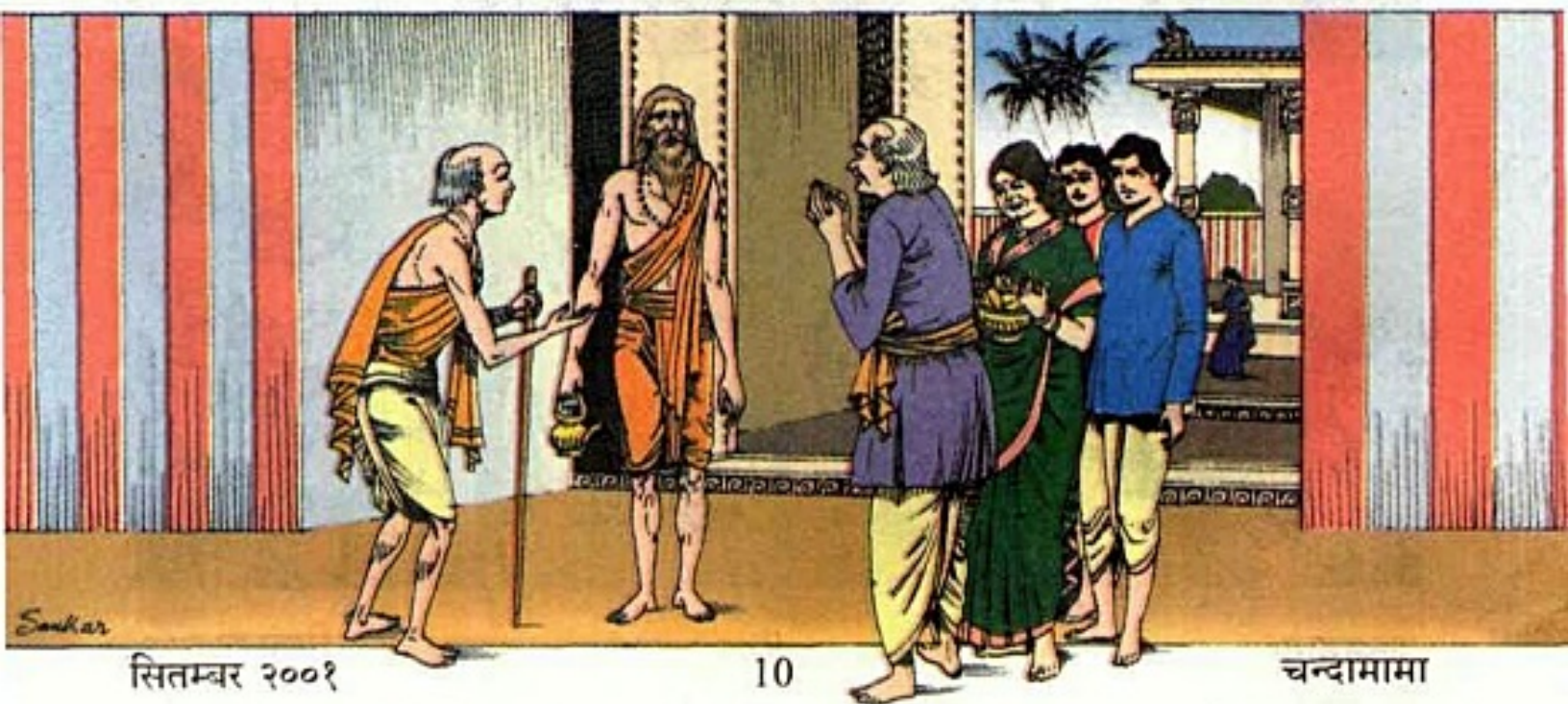
यक्ष पर्वत

9

(गुरु भल्लूक को अपने साथ लेकर खड्ग जीवदत्त अरण्य के सरोवर के पास आये। वहाँ उन्हें स्वर्णाचारी दिखायी पड़ा। समरबाहु की ग़ैरहाज़िरी में उसके अनुयायियों व वीरपुर के राजसैनिकों के बीच लड़ाई शुरु, हो गयी। राजसैनिकों ने म्यानों से तलवारें निकालीं और समरबाहु के अनुचरों पर टूट पड़े।) - अब आगे।

वीरपुर राजा के चिड़िया घर के अधिकारी के साथ अब केवल सात सैनिक ही रह गये। उनमें से एक घायल हो गया और लंगडाता हुआ बाकी सैनिकों के पीछे-पीछे आने लगा। हालांकि समरबाहु के अनुयायियों की संख्या चार ही थी, फिर भी उन्होंने राजसैनिकों के साथ लड़ने का निश्चय कर लिया।

चिड़िया घर के अधिकारी ने समरबाहु के अनुनायियों के पास पहुँचने के पहले ही अपने सैनिकों को रोका और उनसे कहा, "ये लोग तो व्यापारी लगते हैं। इनको देखने से लगता है कि लड़ना इन्हें आता ही नहीं। क्या कहीं पगड़ियाँ ऐसे बांधी जाती हैं? इन्हें तलवार चलाना भी आता नहीं होगा।"

उसकी ये बातें समरबाहु के अनुयायियों ने सुन लीं। उनमें रोष भर आया। अपनी मूँछों पर उंगलियाँ फेरते हुए, जांघों पर ज़ोर से मार मारते हुए उन्होंने ललकारते हुए कहा, "हमारा सामना करके तो देखो। मालूम हो जायेगा कि हमें क्या आता है और क्या नहीं आता। समरबाहु की जय" कहते हुए तेज़ी से आगे आये और सैनिकों पर टूट पडे। वीरसिंह के सैनिकों में से तीन

समरबाहु के अनुचरों की तलवार की धार के सामने टिक न सके और धराशायी हो गये। अब लंगडा सैनिक व अधिकारी पेड़ों में से होते हुए भागने लगे। अधिकारी को भागते हुए देखकर बाकी दोनों सैनिकों ने अपनी हार मान ली और समरबाहु के अनुचरों के सामने झुक गये।

लड़ाई के दौरान दोनों तरफ़ के लोग चीखते-चिल्लाते रहे। जंगली जाति के कुछ लोगों ने ये आवाज़ें सुनीं तो वे दौड़े-दौड़े वहाँ आये। उनकी समझ में नहीं आया कि किन-किन के बीच में लड़ाई हुई हैऔर कौन जीता, कौन हारा।

उनके आश्चर्य को देखते हुए समरबाहु के अनुचरों ने जंगलियों से कहा, "तुम लोग इसी जंगल के निवासी हो न? अब से वीरपुर के राजा को लगान देने की कोई ज़रूरत नहीं है। हमारा राजा समरबाहु अब से तुम सब लोगों का नया राजा है।"

जंगलियों में से एक बूढ़ा आदमी आगे आया और कहने लगा, "साहब, आपने जैसे कहा, वैसा ही करेंगे। बुरा मत मानियेगा। क्या मैं जान सकता हूँ, आपके राजा की राजधानी कहाँ है?" डरते हुए उसने पूछा।

समरबाहु के अनुयायियों में से एक इस प्रश्न का उत्तर देने ही वाला था कि इतने में दो जंगली दो घोड़ों को लेकर वहाँ आये। उस बूढ़े ने उनसे पूछा, "इन घोड़ों को तुमने कहाँ पकड़ा?"

"वीरपुर राजा के सैनिकों में से दो सैनिक घोड़ों पर सवार होकर भाग रहे थे। तब ये घोड़े पेड़ से बंधे हुए थे। उन्होंने इनकी रस्सी तोड़ दी और वे वहाँ से भागने लगे। भागते हुए इन घोड़ों को हमने पकड़ लिया और यहाँ ले आये।" उन दोनों जंगलियों ने कहा।

"हम तुम दोनों के काम से बहुत खुश हुए। तुम्हारी सिफारिश करेंगे और राजा से अच्छा इनाम दिलवायेंगे। इन दोनों घोड़ों को लेकर हमारे साथ पहाड़ी दुर्गवाले नगर तक आ जाना" समरबाहु के एक अनुयायी ने कहा।

समरबाहु के अनुयायी वीरसिंह राजा के "बंदी सैनिकों को लेकर चल पड़े। दो घोड़ों को लेकर वे दोनों जंगली भी उनके पीछे-पीछे आने लगे। देखा, जिन्हें चिड़िया घर के अधिकारी ने पकड़ रखा था।

उन्हें देखकर समरबाहु के अनुयायियों में उत्साह भर आया। वे कहने लगे, "अब से ये क्रूर मृग समरबाहु महाराज के चिडिया घर में आराम

से रहेंगे। इन्हें भी दुर्ग में ले जायेंगे।''

इतने में कुछ और जंगली भी वहाँ आये। उन्हें देखकर समरबाहु के एक अनुयायी ने उनसे पूछा, ''सब कुछ ठीक-ठीक है। परंतु हमने आज तक ऐसे क्रूर मृगों को पाला-पोसा नहीं। ये मृग दुर्ग तक कैसे ले जाये जा सकते हैं?''

तब वही जंगली बूढ़ा आगे आया और कहने लगा, ''साहब, ये पिंजड़े छोटे-छोटे पहियों पर स्थित हैं। आप इन्हें घोड़ों या ऊँटों से खिंचवाकर दुर्ग तक ले जा सकते हैं।''

समरबाहु के अनुयायियों को उनका सुझाया हुआ उपाय सही लगा। जंगलियों ने तुरंत उन पिंजडों को रस्सियों से दो ऊँटों से बांध दिया। एक और ऊँट की पीठ पर जंगली पक्षियों के जालों को कसकर बांध दिया। फिर सभी लोग उस पहाड़ी किले की ओर बढ़े, जिसका निर्माण चालू था।

स्वर्णाचारी किले के निर्माण-कार्य पर लगा हुआ था। पहाड़ के नीचे चले आते हुए उन घोड़ों, ऊँटों और साथ-साथ चले आते हुए उन जंगली आदमियों को देखकर वह चकित रह गया। काम पर लगे मज़दूर भी आश्चर्य भरित होकर यह दृश्य देखने लगे।

घुड़सवार समरबाहु के एक अनुयायी से कहने लगा, ''देखा, महामंत्री स्वर्णाचारी हमें देखकर कितने चकित हैं? मैं पहले जाकर उन्हें पूरा समाचार सुनाऊँगा।'' फिर वह घोड़े से उतरा और पत्थरों के बीच में से आगे बढ़ता हुआ स्वर्णाचारी के पास पहुँचा।

जैसे ही वह वहाँ पहुँचा, स्वर्णाचारी ने उससे

दो सैनिक नगर की तरफ़ भाग गये। यह घटना हमें शीघ्र ही संकट में डाल देगी। तुम तो इतना खुश हो रहे हो मानों यज्ञ के अश्वों को पकड़ लिया हो। उन राज सैनिकों से तुम्हें लड़ने भिड़ने की क्या ज़रूरत आ पड़ी?'' हमारे कुछ सैनिक घायल हुए। शत्रु सेना को मारते-मारते हमारी तलवारों का पैनापन भी घिस गया। हमारे सैनिकों ने लड़ते-लड़ते प्राण छोड़ दिया। मैं और यह सैनिक मात्र बच गये। अपने को शत्रुओं से बचाते हुए यह समाचार आपको पहुँचाने किसी तरह से यहाँ तक आ पाये।''

राजा वीरसिंह ने तुरंत कहा, ''महामंत्री, लगता है कि हमारे राज्य की सीमाओं पर बलवान शत्रु ने अड्डा जमा लिया। तुरंत सेनाध्यक्ष को ख़बर भिजवाइये।''

पूछा, ''तुम लोग तो शिकार करने गये थे। ये घोड़े कहाँ मिल गये? ये पिंजडे कहाँ से ला रहे हैं? ये जंगली आदमी तुम्हारे साथ-साथ क्यों आ रहे हैं?'' उसके स्वर में जानने की बड़ी आतुरता थी।

समरबाहु के अनुयायी ने स्वर्णाचारी को नमस्कार करके कहा, ''वास्तुविद् महामंत्रीजी, हमने जंगल में वीरपुर के राजा के सैनिकों के छक्के छुड़ा दिये। उन्हें बुरी तरह से हराया। दो सैनिकों को क़ैद करके अपने साथ ले भी आये। सात सैनिकों को हमने मार भी डाला। दो सैनिक जान बचाकर वीरपुर की तरफ़ भाग गये।''

दो लोगों के वीरपुर की तरफ़ भागने का समाचार सुनते ही स्वर्णाचारी भय से काँप उठा। समरबाहु के अनुयायी की कही बाक़ी बातें उसे आनंद नहीं दे सकीं। वह नाराज़ होकर आँखें लाल करते हुए चिल्ला पड़ा, ''तुमने कहा कि वीरपुर के

चिड़ियाघर के अधिकारी की बातों का विश्वास मंत्री को नहीं हुआ। उसने उसे अपने पास आने को कहा और आज्ञा दी कि वह चारों ओर घूमता रहे। उसने ध्यान से देखा कि क्या कहीं उसके शरीर पर चोट है या शत्रुओं की तलवार से कहीं उसका पहनावा कट गया। पर मंत्री को ऐसा कुछ दिखायी नहीं पड़ा।

इतने में वहाँ सेनाध्यक्ष पहुँचा। उसकी कमर में म्यान लटक रही थी। उसने आते ही राजा और मंत्री को नमस्कार किया। मंत्री ने अधिकारी का बताया पूरा विवरण उसे सुनाया।

सेनाध्यक्ष ने विनयपूर्वक कहा, ''महामंत्री से मैं क्षमा चाहता हूँ। मैंने इन ऊँटवालों के बारे में

जानकारी प्राप्त करने के लिए निरंजन नामक एक अधिकारी के नेतृत्व में कुछ गुप्तचरों को भेजा है। पर उसने वहाँ जाकर एक सुंदर वन कन्या से शादी कर ली और उनसे मिल गया। इसी कारण पूरा समाचार पाने में विलंब हुआ।''

''लगता है, शत्रुओं ने इस विलंब का पूरा-पूरा फ़ायदा उठाया। सेनाध्य जी, आपको चाहिए कि जब आप गुप्तचरों को नियुक्त करते हैं या इस काम के लिए चुनते हैं तब आपको इसकी जानकारी पाना बहुत ज़रूरी है कि उनकी शादी हुई या नहीं, उनकी संतान है या नहीं। अब तक आपको मालूम हो गया होगा कि ब्रह्मचारियों को गुप्तचर का काम सौंपने से क्या-क्या दिक़तें आती हैं।''

तब राजा ने दख़ल देते हुए कहा, ''सेनाध्यक्ष, आप तुरंत सेनासहित निकलिये और शत्रुराजा के क़िले को घेर लीजिए, उसका सर्वनाश कीजिए। शत्रु राजा को सजीव बंदी बनाकर मेरे सामने उपस्थित कीजिए। यह मेरी आज्ञा है।''

सेनाध्यक्ष सौ घुड़सवारों को व दो सौ सैनिकों को साथ लेकर उस दुर्ग की ओर निकल पड़ा, वहाँ उसका निर्माण-कार्य चल रहा था।

जिस दिन से समरबाहु रीछवालों का बंदी बन गया, उस दिन से स्वर्णाचारी ही सरदार बनकर उनका नेतृत्व संभाल रहा था। जंगल में शिकार करने गये। सैनिक जब शेर व बाघों से भरे पिंजड़ों को ले आये और वहाँ हुई घटनाओं पर प्रकाश डाला तब वह चौकन्ना हो गया। उसे लगा कि किसी भी क्षण वीरसिंह की सेना उस पर आक्रमण

कर सकती है। इसलिए उसने उनका सामना करने के लिए आवश्यक जागरुकता बरती। समरबाहु के अनुयायी को लगा कि उससे अक्षम्य अपराध हो गया, वह बहुत डर गया। अपने को बचाने के उद्देश्य से उसने स्वर्णाचारी से झूठी व अवास्तविक बातें बढ़ा-चढ़ाकर कहीं। उसने कहा कि उन सैनिकों ने हमारा अपमान किया और समरबाहु को भी गालियाँ दीं। हमसे यह सही नहीं गया और हमें उनसे मजबूर होकर लड़ाई करनी पड़ी।

स्वर्णाचारी सोच में पड़ गया। जब बाकी अनुयायी भी वहाँ पहुँच गये तब उसने उनसे कहा, ''हमने अनावश्यक उस राजा से बैर मोल लिया। यह हमारे लिए अच्छा साबित नहीं होगा। वे दोनों राजा से जो भी हुआ, शायद बढ़ा चढ़ाकर

ही कहेंगे। राजा बडी सेना लेकर क़िले को घेर लेंगे, जिसका निर्माण-कार्य अब भी चल रहा है। ऐसे समय पर समरबाहु महाराज यहाँ मौजूद नहीं हैं। कम से कम वे क्षत्रिय महायोद्धा खड्ग जीवदत्त यहाँ होते तो हम वीरसिंह की सेना का मुक़ाबला कर पाते।''

स्वर्णाचारी ने जो सोचा, वही हुआ। भागे चिड़ियाघर का अधिकारी व लंगड़ा सैनिक वीरपुर के राजमार्ग से गुज़रते हुए ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगे, ''देश विपत्ति में फंस गया है। बडी आफ़त आ गयी है। राज्य ख़तरे में है। शत्रुराजा जंगल में आकाश को छनेवाले क़िले का निर्माण कर रहा है। हम पर हमला करने बड़ी सेना लेकर बढ़ा चला आ रहा है।''

उस समय राजप्रासाद के ऊपर खडे होकर राजा वीरसिंह मंत्री से वार्तालाप कर रहा था। उनकी चिल्लाहटों को सुनकर वह आश्चर्य में पड़ गया। इतने में अधिकारी और वह सैनिक क़िले के द्वार तक पहुँच गये। प्रहरी ने उनसे कहा कि वे घोड़ों से उतरें और पैदल अंदर जाएँ।

चिड़ियाघर के अधिकारी ने इस पर आदित्य जताते हुए कहा, ''क्या कह रहे हो? एक तरफ़ देश विपत्ति से घिरा हुआ है, शत्रुराजा किसी भी क्षण हमपर हमला कर सकता है और तुम नियम दुहरा रहे हो, हमारा समय व्यर्थ करने पर तुले हो?''

मौक़ा पाकर लंगड़ा सैनिक तेज़ी से अंदर जाने ही वाला था, प्रहरी ने बर्छी उसके पेट में घुसा दी। सैनिक घोड़े से नीचे गिर गया और ''वीरसिंह महाराज की जय'' का नारा लगाने लगा।

मंत्री ने हाथ उठाते हुए प्रहरी से कहा, ''उन दोनों को जल्दी क़िले में आने दो।''

अधिकारी व सैनिक प्रासाद के ऊपर आये और राजा व मंत्री को विनयपूर्वक नमस्कार किया। तब मंत्री ने अधिकारी से पूछा, ''देश विपत्ति ग्रस्त है? हम पर हमला कौन करनेवाला है?''

अधिकारी ने राजा व मंत्री को एक और बार प्रणाम करते हुए कहा, ''प्रभु, आप जानते ही हैं कि मैं चिडियाघर का अधिकारी हूँ। हमारे अपने राज्य के चिडियाघर के लिए पशु-पक्षियों को पकडने जंगल गया था। कुछ सैनिक भी मेरे साथ थे। वहाँ समरबाहु नामक पर्वत दुर्ग के राजा के सैनिक ऊँटों पर सवार होकर आये और हम पर हमला बोल दिया। हमने उनका डटकर सामना

किया और उनके कुछ सैनिकों का मौत के घाट उतार दिया। किसी भी हालत में बन रहे क़िले की रक्षा के प्रयत्नों में लग गया।

बीरपुर के राजा अगर इस युद्ध में जीत जाएँ और उनकी हार हो जाती तो बच निकलने के लिए उसने दो सुरंग मार्गों की भी व्यवस्था की। उसने जंगली जाति के आदमियों को थोड़ा-बहुत धन दिया और रसद भी। उसने उनसे कहा कि वे एक गुफ़ा में छिप जाएँ, जहाँ से शत्रुसेना के दुर्ग में प्रवेश की संभावना है। सिंह व बाघ जिन पिंजड़ों में बंद है, वे अब जंगलियों के अधीन हैं। उन्हें आदेश दिया गया कि जब शत्रुसेना उस मार्ग पर जाने लगेगी तब वे उन क्रूर मृगों को आजाद कर दें, जिससे वे उनपर टूट पड़ें। इस मौक़े का फ़ायदा उठाकर उन्हें जंगल में भाग जाने की भी अनुमति दी गयी। ऐसा न करके वे समरबाहु की सेना की सहायता करना चाहते हों तो अवश्य करें। उनसे बताया गया कि ऐसा करने पर उन्हें क़ीमती भेंटें दी जाएँगी।

यों स्वर्णाचारी ने क़िले की रक्षा के लिए आवश्यक प्रबंध किये। उसने इसके लिए एक बहुत ही अच्छा व्यूह रचा। एक दिन सूर्योदय के समय पर उसे समाचार मिला कि बीरपुर की सेना क़िले की तरफ़ बढ़ रही है। जंगल में छिपे समरबाहु के अनुयायियों ने स्वर्णाचारी को यह गुप्त समाचार भेजा। स्वर्णाचारी ने अपने लोगों का भाले और अन्य हथियार दिये और उन्हें आदेश दिया कि जैसे ही काम बिल्कुल चुपचाप हो।

थोड़ी देर में बीरपुर का सेनाध्यक्ष सेना सहित पहाड़ के नीचे पहुँच गया। उसने म्यान से तलवार निकालीं और ऊपर खड़े समरबाहु के सैनिकों को ललकारते हुए कहा, ''अरे बदमाशों, मैं बीरपुर राज्य का सेनाध्यक्ष हूँ। तुम सब लोग हथियार फेंक दो और झुक जाओ। नहीं तो तुम सब लोग मारे जाओगे।''

पहाड़ पर खड़े समरबाहु के अनुयायी कोई जवाब दिये बिना शत्रुसेना पर भाले, बर्छियाँ फेंकते जाने लगे। एक भाला सेनाध्यक्ष के कंधे में जा लगा।

- क्रमशः

ये मल्टी-मल्टी है क्या?

मुफ़्त मल्टी यूटीलिटी बॉक्स

किसी भी एवन साईकिल की खरीद पर

अब एवन साईकिल खरीदने की एक और वजह। कोई भी मॉडल खरीदने पर आपको मिलेगा एक मल्टी यूटीलिटी बॉक्स बिल्कुल मुफ्त। जिसको आप अपने लंच, स्नैक्स, पैसे, ज्वैलरी या जरूरी सामान रखने के लिये शान के साथ इस्तेमाल कर सकते हैं। अपने नजदीकी एवन डीलर के पास जायें और ले आये मल्टी यूटीलिटी बाक्स।

स्कीम जारी 9 जुलाई, 2001 से स्टॉक रहने तक। शर्तें लागू।

एवन साईकिल्स लि.
जी.टी. रोड, लुधियाना-141 003 (भारत)
फोन: (91-161) 511480-81, 511494-98
फैक्स: (91-161) 511493
E-mail: avoncycles@vsnl.com
Visit us at: www.avoncycles.com

Themes/487/2001

वेताल कथा

संगीत पुष्प

धुन का पक्का विक्रमार्क फिर से पेड़ के पास गया। पेड़ से शव को उतारा और कंधे पर डाल लिया। यथावत् मौन श्मशान की तरफ़ बढ़ने लगा। तब शव के अंदर के बेताल ने कहा, ''राजन्, साधारणतया राजा विलासमय जीवन के आदी होते हैं। अपने शासन काल में जितना हो सके, उतना सुख भोगने की इच्छा रखते हैं। अपने ऐहिक इच्छाओं की पूर्ति मनमाने ढंग से कर लेते हैं। तुम भी एक राजा ही हो, लेकिन इन सबसे दूर रहकर यहाँ कड़ी मेहनत कर रहे हो। तरह-तरह के कष्टों से गुज़र रहे हो। इसके पीछे अवश्य ही कोई प्रबल कारण होगा।

किसी राजाधिराज ने या चक्रवर्ती ने तुम्हें कोई जिम्मेदारी सौंपी होगी। मुझे लगता है कि उनकी आज्ञा का पालन करते हुए किसी लक्ष्य की प्राप्ति के में लगे हुए हो।

इसीलिए इस निबिड अंधकार में भी अपनी जान की भी परवाह किये बिना आज्ञा पालन में तल्लीन हो। भूल ही गये हो कि यह श्मशान है, यहाँ भूत-प्रेत रहते हैं, बिषैले सर्प होते हैं और होते हैं खूँख्वार जानवर। अपने इस काम में सफल भी हो सकते हो अथवा बिफल भी। इससे तुम बर्तमान जीवन-परिस्थितियों के दास हो जाओगे और भविष्य में राजोचित वैभव से भी वंचित रह जाओगे। साधु-सन्यासी ही शायद ऐसा नीरस जीवन बिता पायेंगे, पर तुम जैसे राजा के लिए यह कदापि संभव नहीं। सुख भोगने की इच्छा से राजा विरले ही मुक्त हो पाते हैं।

राजा होकर तुम एक अनुचित काम पर लगे हुए हो। अब भी कुछ नहीं हुआ, लौटो और राजोचित सुख भोगो। तुम्हें सावधान करने गंधर्व नामक एक गायक की कहानी सुनाऊँगा। ध्यान से सुनो और अपना कर्तव्य जानो'' फिर बेताल गायक की कहानी यों सुनाने लगा।

चंदनपुर नामक गाँव में कुबेर और सुचेल नामक दो संपन्न व्यक्ति रहा करते थे। दोनों के आलीशान घर थे। घर का पिछवाड़ा व प्रांगण विशाल थे। सौ-सौ एकड़ो की उपजाऊ भूमि थी। इन सबसे बढ़कर उनमें थी, उनकी अच्छाई। परंतु हाँ, उनकी व्यवहार-शैली में पर्याप्त भिन्नता थी।

कुबेर धनार्जन पर बहुत ही आसक्त था। सुचेल कलापोषण में दिलचस्पी रखता था। गाँव में जो भी कलाकार आता, सुचेल उसका हृदयपूर्वक स्वागत करता था और अपने घर बुलाकर उसे क़ीमती भेंटें देता रहता था। उसकी सारी सुविधाओं का प्रबंध करता था। कुबेर यह सब कुछ करता तो नहीं था पर माँगने पर कोई न कोई भेंट देता था।

गंधर्व नामक एक गायक इस गाँव की ओर आकर्षित हुआ। क्योंकि हाल ही में उसे मालूम हुआ कि उसके पूर्वज इसी गाँव में रहते थे और फिर बाद में वे यहाँ से जाकर कहीं और बस गये।

किसी को यह मालूम नहीं कि गंधर्व का असली नाम क्या है। बहुत पहले एक राजा ने उसका गाना सुना और उसका यह नाम रखा। अनेकों नगरों में उसने गीत गाये और अपार ख्याति व धन कमाया। अपने पूर्वजों के गाँव में जाने की उसकी तीव्र इच्छा हुई। साथ ही वह अपने गीत ग्रामवासियों को सुनाने के लिए लालायित भी था।

परंतु अब उसके सामने एक समस्या उठ खड़ी हुई। लंबे अर्से से वह ऐहिक सुखों का आदी हो गया था। वैभवपूर्ण जीवन बिताना उसे अच्छा लगता था। वह हर रोज उसी के लिए बनवाये गये सरोवर के गुलाब-जल में स्नान किया करता था। विविध प्राँतों से आये हुए चार प्रकार के व्यंजन पकानेवाले चार रसोइये उसके स्वादिष्ट भोजन की व्यवस्था करते थे। वे चारों मिलकर आपस में चर्चा करते थे और हर रोज कोई न कोई नया पकवान बनाते थे। अपने

मन को उल्लास से भरने के लिए नर्तकियों के नृत्य का कार्यक्रम भी वह बिना चूके देखा करता था। गर्मी उससे सही नहीं जाती। एक महाशिल्पी ने वातावरण को शीतल बनाने के लिए यंत्रों को भी उसके लिए ईजाद किया। उसके बिना वह सो ही नहीं पाता था। उस यंत्र से जो हवा निकलती थी, उसमें परिमल का भी मिश्रण होता था।

गंधर्व उन्हीं भाग्यवानों के बुलावे पर जाकर अपने गीत सुनाता, जो इन सब सुविधाओं की व्यवस्था कर पाते थे। यह तो साफ़ है कि उसके साथ-साथ वे सब लोग होते, जो हर रोज़ उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति करते थे।

चूँकि अब उसने अपने पूर्वजों के गाँव चंदनपुर जाने का निश्चय कर लिया, इसलिए उसने पुलिंद नामक अपने एक अनुचर को यह जानने उस गाँव में भेजा कि क्या वहाँ कोई ऐसा संपत्तिवान है, जो उसे आश्रय दे सके और आवश्यक प्रबंध कर सके।

पुलिंद चंदनपुर आया। उसने कुबेर और सुचेल के बारे में जानकारी प्राप्त की। पहले वह कुबेर के घर गया। पुलिंद के बताये सारे विवरणों को सुनने के बाद कुबेर ने कहा, ''मेरे घर में समस्त सुविधाएँ लभ्य हैं।

गंधर्व को आश्रय देने में मुझे कोई आपत्ति नहीं है। परंतु मुझे न ही गीत से प्यार है, न ही किसी और कला से। इस कारण मैं उनके साथ समय बिता नहीं सकता। उनके कार्यक्रमों में लगातार भाग नहीं ले सकता। हम दोनों के रास्ते अलग-अलग होंगे क्योंकि हमारी अभिरुचियाँ एक समान नहीं हैं। आप अगर चाहते हो कि हमेशा उन्हीं के साथ रहूँ, उन्हीं के कार्यक्रमों का मज़ा लूटता रहूँ, तो मेरे लिए यह मुमकिन नहीं होगा। आप सुचेल से मिलें तो बेहतर होगा।''

पुलिंद, सुचेल से भी मिला। उससे पूरा विषय बताया। सुचेल ने बहुत ही खुश होते हुए कहा, ''गंधर्व जैसे सुप्रसिद्ध गायक का हमारे यहाँ आना मेरा और इस गाँव का भाग्य नहीं तो और क्या है! उनके लिए एक सरोवर का निर्माण करवाऊँगा। सर्वोत्तम रसोइयों व नर्तकियों का प्रबंध कराऊँगा। वे जब तक यहाँ रहेंगे तब तक उन्हीं के साथ रहूँगा।''
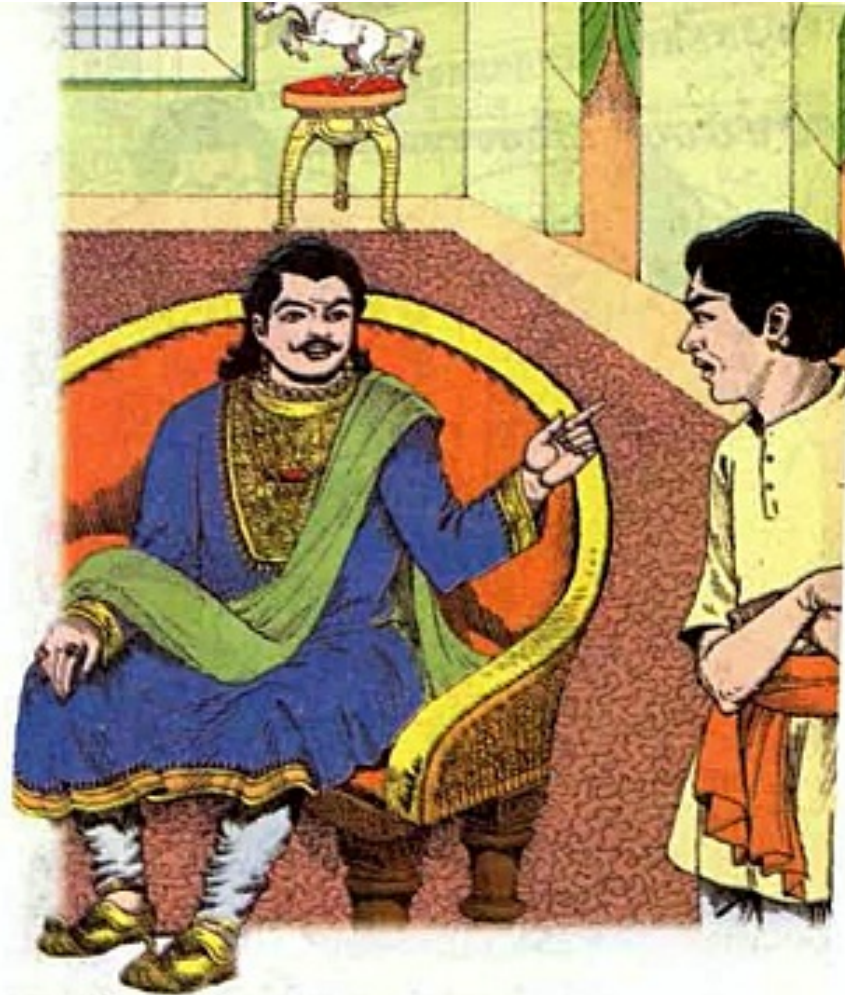
पुलिंद को सुचेल की इन बातों पर आनंद हुआ। लौटकर उसने गंधर्व को पूरा विवरण दिया। गंधर्व भी खुश हुआ और उसने सुचेल को ख़बर भिजवायी कि एक महीने के अंदर ही वह चंदनपुर पहुँचनेवाला है।

गंधर्व जब चंदनपुर जाने की तैयारी में लगा हुआ था तब अप्रत्याशित राजा से बुलावा आया। राजमाता बीमार है। दो दिनों तक वह बेहोश थी, पर आँख खोलते ही उसने गंधर्व का गाना सुनने की इच्छा व्यक्त की।

अब गंधर्व ने चंदनपुर की यात्रा स्थगित कर दी और राजभवन जाकर राजमाता को अपना गीत सुनाया। वह पुलकित होकर बोली, ''किसी भी दवा ने मुझे इतना शांत नहीं किया। एक महीने तक हर रोज़ इसी तरह अपने गीत सुनाते रहना।'' गंधर्व भला राजमाता की आज्ञा को कैसे टाल सकता था। उसने सुचेल को ख़बर भिजवायी कि एक महीने के बाद ही वह चंदनपुर आ पायेगा।

एक सप्ताह के बाद राजवैद्य ने गंधर्व से कहा, ''तुम्हारा संगीत अद्‍भुत है। दीर्घकाल से राजमाता बड़े ही विचित्र रोग से पीड़ित हैं, जिसका हम पता लगा नहीं पाये। मैं उनकी चिकित्सा भी कर नहीं पाया। एक महीने तक तुम उन्हें अपने गीत सुनाते रहना। फिर उसके बाद मैं तुम्हें एक बीज दूँगा। उसे लेकर तुम जंगल जाना। तुम्हारे साथ जाएँगे, केवल दो सैनिक जो तुम्हारी ज़रूरतें पूरी करेंगे। गीत गाते हुए एक जगह पर इस बीज को रोपना। गीत गाते हुए हर रोज़ थोड़ा-थोड़ा पानी देते रहना। पौधा उग आयेगा। छः महीनों में उस पौधे में पुष्प निकलेंगे। उनमें से प्रथम पुष्प तोड़कर मुझे देना। उस पुष्प से बनायी गयी औषधि से राजमाता का रोग हमेशा के लिए अच्छा हो जायेगा।

परंतु एक नियम का तुम्हें पालन करना होगा। जब तक जंगल में हो तब तक तुम्हें कंद, मूल, फल, दूध, पानी ही आहार के रूप में लेना होगा। किसी और प्रकार के आहार-पदार्थों को उपयोग में लाना नहीं चाहिए। आहार में हो या आदतों में, कोई त्रुटि नहीं होनी चाहिए। वातावरण भी कृत्रिम न हो, इसीलिए मुझे मजबूरन जंगल भेजना पड़ रहा है।''

यद्यपि ये बातें राजवैद्य के मुँह से निकलीं, पर गंधर्व अच्छी तरह से जानता था कि यह राजा की आज्ञा है। इस बात पर उसे हर्ष भी हुआ कि उसका संगीत राजमाता के प्राण को बचाने के लिए उपयोग में आ रहा है। पुलिंद को बुलाकर स्वयं सुचेल को यह संदेश सुनाने के लिए उसने कहा।

पुलिंद ने स्वयं जाकर यह ख़बर सुचेल को सुनायी। पूरा प्रबंध करके वह बड़ी बेचैनी से गंधर्व का इंतज़ार कर रहा था। वास्तुशास्त्र के अनुसार सुचेल के घर में सरोवर दो महीनों से अधिक समय तक रखा नहीं जा सकता। इसलिए यह ख़बर पाते ही उसने सरोवर को फिर से भरवा दिया। फिर रसोइयों को व नर्तकियों को दुगुना दाम देकर भेज दिया।

सुचेल ने पुलिंद से कहा, ''मुझे इस बात की चिंता नहीं कि मेरे सारे प्रबंध बेकार गये। आने के पहले दस दिनों की मोहलत मुझे दे दें तो फिर से पूरा इंतज़ाम करूँगा। गंधर्वजी के आगमन की प्रतीक्षा बड़ी उत्सुकता से करूँगा।''

पुलिंद ने लौटकर जो-जो सुचेल ने कहा, हूबहू

गंधर्व को सुनाया। गंधर्व यह सुनकर बहुत खुश हुआ, साथ ही उसे बहुत आश्चर्य भी हुआ। उसने मन ही मन ठान लिया कि सुचेल का आतिथ्य पाने के लिए ही सही, उसे चंदनपुर जाना ही होगा। नियत दिन पर वह जंगल निकल पड़ा।

गंधर्व छः महीने जंगल में ही रहा। राजवैद्य के कहे अनुसार किया। पहले कुछ दिनों तक उसे तक़लीफ़ महसूस हुई। परंतु थोड़े ही दिनों में उसका शरीर उस वातावरण के अनुकूल हो गया और वह अपने को अधिक स्वस्थ महसूस करने लगा। उसके गले से हर रोज़ एक नया राग उभरने लगा। उसके स्वर में निखार आता गया। पहले उसमें इतना माधुर्य भी नहीं था।

फिर गंधर्व अपने संगीत से उगाये पुष्प को लेकर राजधानी पहुँचा। उस पुष्प से बनायी गयी दवा से राजमाता का रोग दूर हो गया। किसी ने सोचा भी नहीं था कि इतनी आसानी से राजमाता चंगी हो जायेंगी।

उस समय पड़ोसी राजाओं को गंधर्व के संगीत पुष्प वैद्य के बारे में मालूम हुआ। पड़ोसी राजा ने गंधर्व के अदभुत संगीत को सुनने की इच्छा प्रकट करते हुए, इस राजा को संदेश भेजा। राजा ने तुरंत पड़ोसी राज्य जाने की उसे आज्ञा दी। गंधर्व राजा की आज्ञा का पालन करने पड़ोसी राज्य जाने निकल पड़ा। जाने के पहले उसने पुलिंद से कहा कि उसके चंदनपुर जाने के कार्यक्रम के बारे में वह सुचेल को कोई ख़बर न भेजे।

गंधर्व का गीत सुनते ही पड़ोसी राजा का मन बड़ा ही संतुष्ट हुआ। ऐसी शांति उसने कभी भी महसूस नहीं की थी। वह गंधर्व को शाश्वत रूप से अपने ही आस्थान में रख लेना चाहता था। किन्तु उसे मालूम था कि गंधर्व के देश के राजा इस प्रस्ताव को कदापि स्वीकार नहीं करेगा। वह असमंजस में पड़ गया और राजवैद्य से सलाह माँगी।

वैद्य ने कहा, ''प्रभु, दीर्घकाल से आपका मन शांत नहीं है। शांति के लिए आप तड़प रहे हैं। मुझे लगा कि आपके मन की अशांति को दूर करने के लिए कोई भी दवा है ही नहीं। किन्तु गंधर्व के गीत ने यह कर दिखाया। उसके गीत में अवश्य ही कोई विशेषता है। इसका कारण उसके गाने का नयापन हो सकता है। पर लगातार उसके स्वर को ही सुनते हुए आप भी शायद ऊब जाएँगे। वह पुराना पड़ जायेगा और फिर से आपके मन की शांति चली जायेगी।

एक वैद्यशास्त्र में संगीत पुष्प का ज़िक्र है। जिस प्रकार पड़ोसी राजा ने राजमाता के लिए संगीत पुष्प मंगवाया था, उसी प्रकार आप भी संगीत पुष्प मंगायेंगे तो शाश्वत रूप से आपके मन की शांति की समस्या हल हो जायेगी। यही मेरा अभिप्राय है।''

पड़ोसी राजा की प्रार्थना पर गंधर्व पुनः जंगल गया। पहले उसे कठिन तो लगा, पर धीरे-धीरे यही ज़िन्दगी उसे अच्छी लगने लगी। संगीत पुष्प
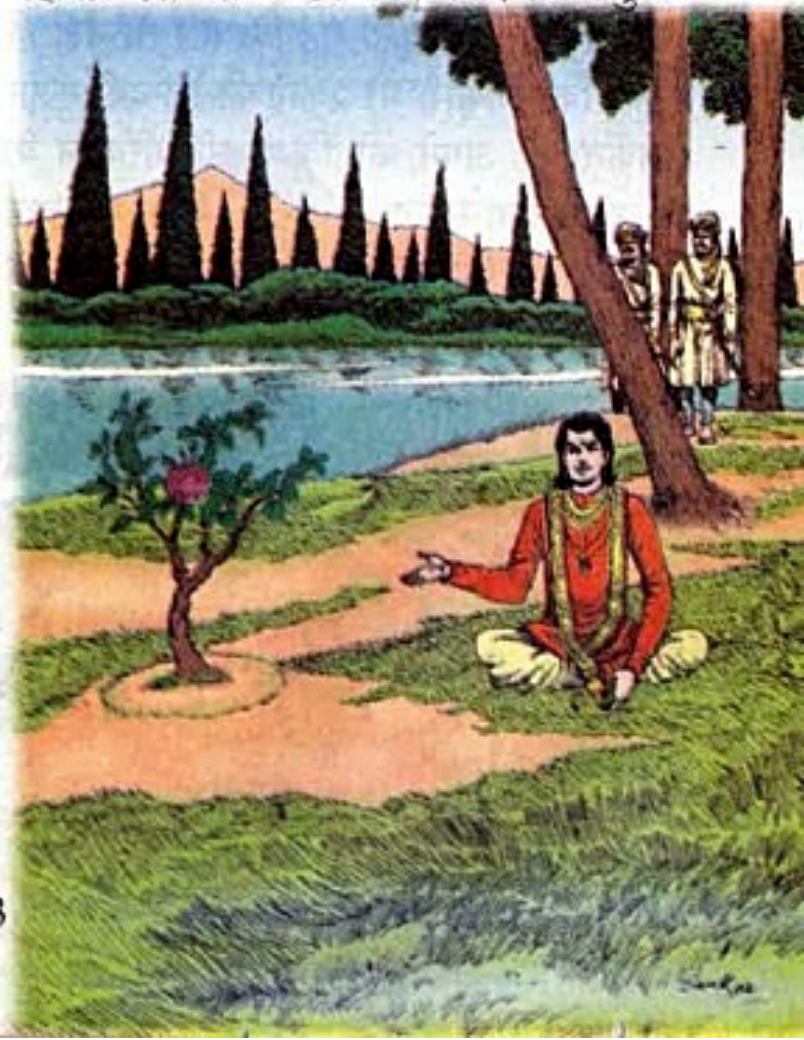
को उगाकर, पड़ोसी राजा को सौंपकर व स्वदेश लौट गया।

थोड़े ही दिनों में फिर से वह विलासपूर्ण जीवन का आदी हो गया। तब पुलिंद ने एक दिन चंदनपुर की याद दिलायी। दूसरे ही क्षण गंधर्व बोल उठा, ''कुबेर को ख़बर भेजो कि मैं चंदनपुर आ रहा हूँ। मैं उसी का मेहमान बनकर रहूँगा।''

बेताल ने यह कहानी सुनायी और कहा, ''राजन्, गंधर्व का निर्णय सुनते हुए लगता है कि वह अस्तव्यस्त स्थिति में है, लंबे समय से सुचेल उसके आगमन की प्रतीक्षा कर रहा है। ऐसे योग्य व्यक्ति व अच्छे मेज़बान को छोड़कर, भुलाकर, कुबेर के यहाँ रहने का उसका निर्णय अटपटा व असंगत नहीं लगता? क्या तुम्हें ऐसा नहीं लगता कि उसकी बुद्धि भ्रष्ट हो गयी और वह अपना मानसिक संतुलन खो बैठा। जंगल में रहकर उसने वैरागी का जीवन बिताया। नगर लौटकर फिर से ऐशो-आराम की जिन्दगी गुज़ारने लगा। इसके कारण गंधर्व को कहीं यह बिश्वास तो नहीं हो गया कि मैं किसी भी प्रकार की जिन्दगी गुज़ार सकता हूँ, अपने को किसी भी परिवर्तन के अनुकूल बना सकता हूँ, मेरे संदेहों के समाधान जानते हुए चुप रह जाओगे तो तुम्हारे सिर के टुकड़े-टुकड़े हो जाएँगे।''

विक्रमार्क ने कहा, ''किसी और के दबाव के बिना, बिना किसी की ज़बरदस्ती के स्वेच्छापूर्वक मनुष्य अपने लिए जो परिवर्तन चाहता है, वह उसमें नया उत्साह भरता है और यह सौ फीसदी सच है। किन्तु गंधर्व ने जो निर्णय लिया, उसका कारण संगीत पुष्प है। संगीत पुष्प के कारण ही दो बार चंदनपुर की उसकी यात्रा स्थगित हुई। और इसका कोई भरोसा भी नहीं है कि वह फिर से स्थगित नहीं होगी।

गंधर्व को ज्ञात था कि उसकी यात्रा निश्चित नहीं होती, वह अस्थायी होती है। इसीलिए उसने सुचेल को तक़लीफ़ नहीं पहुँचायी, जिसे वह बहुत चाहने लगा था। उसे मालूम था कि ख़बर पाते ही सुचेल बड़े पैमाने पर इंतज़ाम करेगा, पर उसके न जाने से उसे बहुत कष्ट होगा। इसीलिए उसने कुबेर का मेहमान बनने की इच्छा प्रकट की, क्योंकि वैसे ही कुबेर की उसके आगमन में कोई खास दिलचस्पी नहीं है। बस, बात इतनी ही है। न ही उसकी मानसिक स्थिति खराब है और न ही उसकी मतिभ्रष्ट हो गयी।

राजा के मौन-भंग में सफल बेताल शव सहित ग़ायब हो गया और फिर से पेड़ पर जा बैठा।

(आधार - ''वसुन्धरा'' की रचना)

भारतीय त्यौहार

राजकीय प्रसन्नता की वापसी

जी हाँ, यह है केरल का ओणम और ओणम के नाम से ही हमारे मन में ख्याल आता है रेसिंग बोट, रंग-बिरंगे फूलों से सजी आँगनों में रंगोली की। यह त्यौहार मानसून समाप्त होने के तुरंत बाद मनाया जाता है। इस समय यहाँ की धरती हरी-भरी और तरो ताजा हुई होती है। ओणम केरल के दो मुख्य त्यौहारों में से एक है। विशु जो अप्रैल में मनाया जाता है। अपनी फसलों को सफलतापूर्वक घर पर आने के बाद किसान इस त्यौहार को मनाते हैं।

ओणम केरल का हजारों वर्ष पुराना त्यौहार है। ८६१ ए.डी. में प्राप्त एक ताँबे की तस्तरी से हमें ओणम का त्यौहार मनाने का प्रमाण मिलता है।

ओणम 'चिंगाम' माह (अगस्त-सितम्बर) में मनाया जाता है, जो केरल के नये वर्ष का पहला माह होता है। यह वही समय है जब उत्तर भारत में श्रावण नक्षत्र, श्रावण और भाद्रपद के महीने में निकलता है। ओणम का त्यौहार लगभग एक सप्ताह तक प्रत्येक घर और प्रत्येक जाति में मनाया जाता है। कुछ सम्प्रदायों में यह १० दिनों तक भी मनाया जाता है, जो हस्त नक्षत्र से श्रावण नक्षत्र तक होता है।

महाबली की घर वापसी (कथा)

बहुत समय पूर्व असुर सम्राट महाबली केरल पर राज्य करता था। वह बहुत बुद्धिमान, न्याय प्रिय, और सक्षम राजा था, जिसे उसकी प्रजा बहुत प्यार करती थी। उसके शाशनकाल में प्रजा बहुत सुखी थी। वह केवल धरती पर ही नहीं बल्कि स्वर्ग और पाताल पर भी राज्य करता था।

उसकी प्रसिद्धि और यश से स्वर्ग के देवता भी परेशान थे। वह देवताओं के क्रोध और अप्रसन्नता को सहता था। स्वर्ग पर शासन जमा लेने के कारण देवताओं ने उसे दण्डित करने का निश्चय किया और भगवान विष्णु की सहायता माँगी।

विष्णु सही समय की प्रतीक्षा कर रहे थे। शीघ्र ही महाबली ने अश्वमेघ यज्ञ की घोषणा की। विष्णु ने वामन रूप धारण किया और सीधा यज्ञ-स्थल पर पहुँच गए। अश्वमेघ की परम्परा है कि ब्राह्मण जो भी माँगे वह सब उसे, राजा को दान में देना पड़ता है। इसी को पूरा करने के लिए महाबली ने वामन से पूछा कि आपकी क्या इच्छा है?

वामन ने कहा कि उनके द्वारा नापी गई तीन पग धरती चाहिए। उसने अपने गुरु शुक्राचार्य की सलाह लिए बिना ही तुरंत हाँ कर दिया। उसने सोचा कि इतना छोटा उत्तम ब्राह्मण सिर्फ तीन पग धरती माँग रहा है, तो क्या बड़ी बात है! परन्तु तभी वामन इतने बड़े हो जाते हैं कि ढाई पग में ही तीनों लोक नाप लेते हैं। अब सवाल आता है कि तीसरे पग को पूरा कैसे किया जाये। राजा अपनी पीठ नापने को कहता है। वामन ज्यों ही उसके ऊपर पैर रखते हैं, तो राजा उनसे एक वचन लेता है कि वह वर्ष में एक बार अपने राज्य में आना चाहेगा। तब विष्णु ने एवमस्त कहा और अंतरधान हो गए।

और यही समय है कि जब प्रत्येक वर्ष महाबली अपने राज्य में वापस आते हैं। यही ओणम है।

लोग यह मानते हैं कि उनका प्रिय राजा इन १० दिनों में उनकी प्रसन्नता देखने के लिए कभी भी आ सकता है। इसीलिए महाबली के स्वागत में ओणम से पहले घर की सफाई और साज-

आजकल वामन, जिसने राजा को उसके ही राज्य से समाप्त कर दिया और महाबली दोनों को एक साथ पूजा जाता है। वामन और बलि को दर्शाने के लिए मिट्टी के चबुतरे बनाते हैं, और उसे फूलों से सजाते है। वामन की पूजा प्राचीन-काल में नहीं की जाती थी।

सज्जा करते हैं। त्यौहार के दिन प्रातःकाल सारी स्त्रियाँ और बच्चे फूलपत्तों से आकर्ष रंगोलियाँ बनाते हैं। जिसे 'पूकोलम' कहते हैं। उस दिन लोग, नए कपड़े पहनते हैं, उपहार देते हैं और गीतों द्वारा अपने राजा की प्रशंसा करते हैं।

औरतें इन दसों दिन तरह-तरह के स्वादिष्ट भोजन बनाती हैं। वे लोग परम्परा गत नृत्य 'काईकोट्टीकली' करती हैं।

सबसे आकर्षक खेल पुरुष वर्ग के लिए बोट रेसिंग होता है। ये लकड़ी की लम्बी नाव साँप की तरह दिखाई देती है। इसको सौ लोग रेसिंग के दिन चलाते हैं। इन बड़ी नावों के अलावा छोटी नावें भी होती हैं, जो बच्चे भी चलाते हैं। इस प्रकार पूरा माहौल खुशी का होता है।

जोड़े बनाओ

ओणम से संबंधित इन शब्दों का सही अर्थ देनेवाले शब्द ढूँढ़िये!

१. कईकोट्टीकली	अ. ओणम के दिन नए कपड़े पहनना।
२. ओनाकोडी	आ. बोट रेस (नाव दौड़ाना)
३. पूकोलम	इ. ओणम का भोजन
४. वल्लमकली	ई. लोक नृत्य
५. उनासादमा	उ. फूलों के चित्र

उत्तर :- १ - ई, २ - अ, ३ - उ, ४ - आ, ५ - इ

भारत की गाथा

एक महान सभ्यता की झांकियाँ युग-युग में सत्य के लिए इसकी गैरवममी खोज

२०. राजा की बाँयीं आँख में क्यों आँसू उमड़ पड़े ?

''दादाजी, नदी तट पर जो मंदिर है, वहाँ यज्ञ होनेवाला है? आपको यह बात मालूम ही होगी। कुछ बड़े लोग यज्ञ के इस भार को संभाल रहे हैं और नगर के कुछ धनाढ्य दान भी दे रहे हैं।'' कहते हुए संदीप ने अंदर क़दम रखा।

''ऐसी बात है?'' कहते हुए देवनाथ ने समाचार पत्र बग़ल में रख दिया। पर पोते की कही बात पर कोई विशेष रुचि नहीं दिखायी। दादाजी के इस रवैय्ये पर संदीप को आश्चर्य हुआ। किन्तु उसने अपने आश्चर्य को प्रकट किये बिना पूछा, ''दादाजी, उनका दावा है कि इस यज्ञ से विश्व में शांति की स्थापना होगी। क्या यह संभव है? यह सच है?''

''मैं भी नहीं जानता कि यह संभव है या नहीं। फिर भी मेरा मानना है कि हमें श्रद्धा सहित इस शांति की आदत अपने आप में डालनी चाहिए। यह कोई बाहर से आनेवाला विषय या वस्तु नहीं है। जो यज्ञ करते हैं, उनके हृदयों में शांति हो तो वह दूसरों पर भी अपना प्रभाव दिखा सकती है।'' देवनाथ ने गंभीरतापूर्वक कहा।

''तो आप क्या समझाते हैं कि इसे लेकर इतना शोरगुल अनावश्यक है?'' संदीप ने पूछा।

''हाँ, एक तरह से ऐसा कहना ठीक ही है। यहाँ एक और बात याद रखने लायक़ है। यज्ञ करनेवाले पुजारी अति श्रद्धा और भक्ति के साथ प्रशांत वातावरण में अगर यज्ञ करेंगे तो वहाँ उपस्थित

विश्वावसु

भगवान की सेवा में समर्पित करते हैं। अब विश्व शांति के लिए यज्ञ हो रहे हैं। इसी तरह एक समय था, जब कि संतान के लिए, कीर्ति के लिए भी यज्ञ किये जाते थे। जो भी हो, यज्ञ का ध्येय होता था मानव का महोन्नत दिव्य शक्तियों के साथ संधान।'' देवनाथ ने कहा।

''तो इसका यह मतलब हुआ कि यज्ञ भी कई प्रकार के हैं। यज्ञ के हवनकुंड में अग्नि प्रज्वलित करके उसमें तरह-तरह की वस्तुएँ डाला करते थे। है न?'' संदीप ने पूछा।

''यज्ञ का बाह्य संकेत है, अग्निकुंड। जिस प्रकार अग्नि की ज्वालाएँ आकाश को छूने लगती हैं, उसी प्रकार मनुष्यों के विचार भी, इच्छाएँ भी उन्नत हो, ज्वालाएँ मलिनता का हरण करती हैं और स्वच्छता को व्याप्त करती हैं, निर्मलता प्रदान करती हैं। यही हमारे पूर्वजों की आकांक्षाएँ थीं। हमारे पास जो भी है, उसे दैव प्रदत्त मानकर भक्ति सहित भगवान को ही समर्पित करने की सद्बुद्धि जब तक हममें होगी, तब तक असली यज्ञ हममें ही निरंतर होता रहता है। साधारण लौकिक जीवन में भी हम जिन्हें बहुत चाहते हैं, जिनके साथ हामरा बहुत लगाव है, उन्हें भी उस स्थिति में त्याग देने के लिए हम सन्नद्ध रहते हैं। यहाँ तक कि कुछ ऐसे अमर महात्मा भी हैं, जिन्होंने अपने प्राणों का भी त्याग किया। हरिश्चंद्र की कहानी हम जानते हैं। ऐसा कोई नहीं होगा, जो दानी कर्ण के बारे में न जानता हो। जो भी दान माँगने आते थे, कर्ण ने उन्हें कभी भी निराश नहीं किया। यह उनका व्रत था और उन्होंने इस व्रत को कभी भी भंग नहीं किया। कवचकुंडल उनके शरीर के भाग थे। पर उस पुण्यवान ने उन्हें भी अपने

जनता के मनोभावों पर इसका प्रभाव कुछ हद तक पड़ सकता है।'' देवनाथ ने कहा।

''कहा जाता है कि पूर्व काल में यज्ञ अक्सर किये जाते थे। क्या वे सब केवल आचार मात्र थे?'' चाय का प्याला लिये आयी जयश्री ने पूछा।

मुस्कुराते हुए देवनाथ ने प्याला लिया और कहा, ''यज्ञ नामक भावना काल-प्रवाह में कितने ही प्रकार से परिवर्तित हुई है। पहले-पहले मानव ने भगवान के साथ अपने संबंधों को जोड़ने के लिए यज्ञ प्रारंभ किया और इसे एक प्रेरणा मानी। मानव अहंभाव को त्यजकर, अपने संकल्पों को व कर्मों को श्रद्धासहित भगवान को समर्पित किया जानेवाला पवित्र कर्म है, यज्ञ! यज्ञ का अर्थ है, हमारी आशाओं को भगवान को आहुति देना। यही उदात्त यज्ञ है। कुछ और यज्ञ भी हैं। इनके द्वारा मानव प्रार्थनाओं के रूप में अपनी इच्छाएँ

शरीर से काटकर दान में दिया। उनके दानी गुण को स्पष्ट करनेवाले एक उदाहरण का उल्लेख यहाँ आवश्यक है, जिसके बारे में मैं तुम्हें यहाँ विशद रूप से बताना चाहूँगा। एक दिन वे अपने चंद अतिथियों के साथ भोजन कर रहे थे। तब भवन के मुखद्वार पर एक मुनि आये। अपनी पुत्री के विवाह के लिए थोड़े-से धन की उन्होंने याचना की। चूँकि वे दायें हाथ से खाना खा रहे थे, अतः बायें हाथ से अपने गले से रत्नहार निकाला और मुनि को दिया। कर्ण के साथ भोजन करनेवालों में से एक अतिथि ने पूछा, "क्या आप जानते नहीं कि दान दायें हाथ से ही दिये जाने चाहिए? नियमावली यही कहती है। भोजन समाप्त करने के बाद भी आप यह दान दे सकते थे।" यों उन्होंने अपना संदेह व्यक्त किया।

"कौन कह सकता है कि भोजन समाप्त करते-करते मन बदल नहीं जायेगा? मन तो चंचल है। अन्यों की भलाई करने के विचारों को तुरंत अमल में लाना चाहिए। किसी को हानि पहुँचानी हो, तो शांत चित्त होकर खूब सोचना-विचारना चाहिए" कर्ण ने कहा।

"क्या ऐसे उदात्त स्वभाववाले सचमुच होते हैं?" संदीप ने पूछा। "धीरोदात्त ऐसे उदात्त स्वभावी तुममें भी निहित हैं। और हम सब यह जानते भी हैं। हममें निहित ऐसे उत्तम गुणों को जागृत करने के लिए ही हमारे पुराण, हमारा प्राचीन साहित्य ऐसे पुण्यात्माओं के बारे में हमें याद दिलाते हैं। क्या तुम्हें मयूर ध्वज की कहानी मालूम है?" देवनाथ ने पूछा।

संदीप ने कहा कि मुझे मालूम नहीं। "तो ठीक है। उसकी कहानी मुझसे सुनो।" फिर देवनाथ मयूरध्वज की कहानी सुनाना आरम्भ किया।

धर्मराज जब हस्तिनापुर पर शासन चला रहे थे तब मयूरध्वज मणिपुर राज्य के राजा थे। धर्मराज ने जब राजसूय यज्ञ प्रारंभ किया तब अपने हितैषियों की सलाह के अनुसार मयूरध्वज ने भी राजसूय यज्ञ करने का संकल्प किया।

राजसूय यज्ञ के प्रारंभ में भूप्रदक्षिणा के लिए एक अश्व छोड़ा जाता है। उसके साथ-साथ सैनिक भी जाते हैं। वह अश्व विविध राज्यों से निरांटक लौटकर आता है तो इसका यह अर्थ हुआ कि उन-उन राज्यों के राजाओं ने उस राजा को अपना सम्राट स्वीकार किया है, जिस राजा से वह अश्व भेजा गया।

धर्मराज के भेजे यागाश्व के साथ-साथ कृष्ण अर्जुन भी उसकी रक्षा के हेतु गये। जब अश्व मणिपुर राज्य के निकट पहुँच रहा था तब उन्हें मालूम हुआ कि मयूरध्वज का अश्व भी उसी तरफ़ आ रहा है। इस अश्व के रक्षक थे मयूरध्वज के पुत्र ताम्रध्वज। कृष्ण अर्जुन चाहते थे कि किसी भी स्थिति में उस अश्व को पकड़ लेना चाहिए और अपने अधीन कर लेना चाहिए। किन्तु मयूरध्वज का अश्व जब उस तरफ़ आ रहा था तब एक अप्रत्याशित घटना घटी। कृष्ण अर्जुन उस यागाश्व को देखते रह गये, वे उसे पकड़ नहीं पाये। वह अश्व वहाँ से आगे बढ़ता गया।

कृष्ण अर्जुन को वहाँ यह सत्य मालूम हुआ कि मयूरध्वज उत्तम कोटि के महाराज हैं। वे आशाओं व आकांक्षाओं से परे हैं। अपने लिए कुछ भी चाहनेवालों में से नहीं हैं। शुभ घड़ियों में जो कुछ भी माँगा जाए, निधड़क दे देते हैं। प्रजा भी अथक यही कहती रहती है कि वे धर्मप्रभु हैं।

कृष्ण अर्जुन इन बातों की वास्तविकता जानने के लिए बहुरूपिये बनकर मयूरध्वज के यहाँ गये।

''महाराज, जब हम अरण्य मार्ग से यात्रा कर रहे थे तब एक भयंकर सिंह ने मेरे पुत्र को पकड़ लिया। हमने उससे विनती की कि वह हममें से एक को खा जाए और बालक को छोड़ दे। किन्तु उस सिंह ने यह कहकर स्पष्ट कर दिया कि जब तक कोई सत्पुरुष उसके आहार के लिए लाया नहीं जायेगा, तब तक वह बालक को नहीं छोड़ेगा। हम बहुत गिड़गिड़ाये पर वह टस से मस न हुआ। उसने आख़िर कह दिया कि ऐसा न होने पर कोई सत्पुरुष व परमभक्त मानव लाया जाए, जिसका आधा शरीर मात्र खाकर शांत हो जाऊँगा। उसने हमसे यह भी कहा कि आप ही वे परमभक्त हैं। मेरे पुत्र की रक्षा करने क्या आप अपना आधा शरीर त्याग नहीं सकते?'' कृष्ण ने पूछा।

परदे के पीछे खड़े होकर मयूरध्वज की पत्नी सारी बातें सुन रही थीं। वे तुरंत आगे आयीं और

कहने लगीं "पत्नी को अर्धांगिनी भी कहते हैं। इसका अर्थ हुआ कि वह पति के शरीर का आधा भाग है। मेरे पति के बदले मुझे सिंह के पास ले जाइये। वह मुझे खा लेगा और आपके पुत्र को मुक्त कर देगा।"

"आपकी बात सही लगती है, परंतु इसमें एक उलझन है। यह सच है कि पत्नी पति का आधा भाग है। परंतु वह तो केवल बायाँ भाग मात्र है। सिंह तो शरीर के दायें भाग की ही माँग कर रहा है" कृष्ण ने विनयपूर्वक कहा।

मयूरध्वज तुरंत खड़ा हो गया और कहा, "तब फिर देरी क्यों? सिंह को ज़्यादा भूख लग जाए तो वह अपनी सहनशक्ति खो देगा और हो सकता है, वह तुम्हारे पुत्र को हानि पहुँचाये। यह तलवार लीजिए और मेरे शरीर के दो टुकड़े कीजिए। मेरा दायाँ भाग मृगराज को आहार के रूप में समर्पित कीजिए।" कहते हुए उन्होंने खड्ग कृष्ण के हाथों में थमा दिया।

कृष्ण ने खड्ग लिया और ऐसा अभिनय किया, मानों वे मयूरध्वज के शरीर के दो टुकड़े करनेवाले हों। उस समय उन्होंने देखा कि महाराज की बायीं आँख में आँसू भर आये हैं।

"आपको मन ही मन इस बात की चिंता है कि शरीर का आधा भाग देना पड़ रहा है। नहीं तो आपकी आँख से ये आँसू क्यों निकलते? हृदयपूर्वक न देने पर किसी भी वस्तु को ग्रहण करना नहीं चाहिए।" कृष्ण ने कहा।

"मित्र, क्या आपने देखा नहीं कि मेरी बायीं आँख आँसू बरसा रही है। उसे इस बात पर दुःख है कि यह सौभाग्य उसे क्यों नहीं मिला, शरीर के दायें भाग को ही क्यों मिला। इसी दुख से वह रो पड़ी। अब आप अपना काम कीजिए", मयूरध्वज ने कहा।

दूसरे ही क्षण कृष्ण अर्जुन असली रूपों में प्रकट हुए और मयूरध्वज का अभिनंदन किया। उसके अपूर्व त्याग की भूरि-भूरि प्रशंसा की। उससे हाथ मिलाया। उनके राजसूय यज्ञ की समाप्ति तक वे वहीं रहे और धर्मराज के राजसूय यज्ञ में उपस्थित होने के लिए निमंत्रित किया। फिर उन्हें अपने साथ ले भी गये।

"अद्‌भुत !" जयश्री ने कहा। "मानव की शक्तियों पर हमारे पूर्वजों का अगाढ विश्वास था। ऐसी कथाओं के द्वारा हमें यह संदेश मिलता है।" देवनाथ ने कहा।

- क्रमशः

भरत नाट्यम की परम्परा

भरत नाट्यम की मनमोहक मुद्राओं और सम्बद्ध कदमताल से कौन है जो आकर्षित नहीं होगा? जबकि इस नृत्य शैली की सृष्टि ब्रह्मा ने स्वयं की हो।

ऐसा कहा जाता है कि देवता और गंधर्व ब्रह्मा के पास प्रार्थना लेकर गए कि वे पाँचवें वेद की सृष्टि करें। जो इतना सुन्दर हो कि वह सभी की आत्मा को छू ले। इसीलिए उन्होंने *नाट्य वेद* की सृष्टि की और चारों वेदों में से कुछ तत्वों को निकालकरके नाट्य वेद रचा। ब्रह्मा ने ऋगवेद से *पथ्य*, यजुर्व वेद से *अभिनय*, सामवेद से *संगीत* तथा अथर्व वेद से *रास लीला* लेकर इस पाँचवें वेद की रचना की।

ब्रह्मा ने इसके बाद इस कला को भरत मुनि को सौंप दिया, जिससे वे मानव जाति को इसकी शिक्षा दे सकें। भरत मुनि ने इसी वेद की सहायता से *नाट्यशास्त्र* की रचना की। जिसमें इन्होंने विस्तृत रूप से भारतीय संगीत नाट्य और नृत्य की जानकारी दी। इसी कारण इस नृत्य का नामकरण मुनि के नाम पर रखा गया।

भरतनाट्यम् भारत का सबसे पुरानी शास्त्रीय नृत्य शैली है। इसकी मुद्राओं को तमिलनाडु के

मंदिरों में दर्शाया गया है। तमिल साहित्य में संगम काल की रचित *'सिलापतिकारम्'* और *'मणिमेघलय'* पुस्तक में इस नृत्य शैली का वर्णन है।

हिन्दू पुराण के अनुसार भगवान शिव जो नृत्य शैली में दक्ष है, उन्होंने यह नृत्य पार्वती के साथ मिलकर किया है। भगवान शिव के द्वारा किया गया नृत्य काफी भयंकर और तीव्र गति की मुद्राओं में किया गया जिसे *तांडव* कहते हैं। इसके दो प्रकार हैं, जिसमें खुशी में किया जानेवाला आनन्द *तांडव* और क्रोध में किया जानेवाला *रुद्र तांडव* कहलाता है। देवी पार्वती द्वारा किया गया। नृत्य सुन्दर और शोभायमान है जिसे *लास्या* कहते है।

जो गीत इस नृत्य में प्रयोग में लाए जाते हैं, वे हिन्दु पुराणों, साहित्य तथा धर्म के मौलिक रूप हैं। गायक कलाकार के साथ *मृदंग, वॉयलिन* और *कलाकार तालमेल* बिठाते हैं।

प्राचीनकाल में भरतनाट्यम् *देवदासी,* मंदिर की नर्तकी तथा *राजनर्तकियों* द्वारा किया जाता था। तमिल राजा संगीत और नृत्य के सेवक थे।

दुर्भाग्यवश २०वीं शताब्दी के आरम्भ में यह नृत्य काफी कुप्रभावित हुआ। क्योंकि कानून देवदासी प्रथा को समाप्त कर दिया गया। लेकिन इस कारण यह शैली मर नहीं गई, बल्कि अनेक कला के पुजारियों ने, कलाकारों ने भरतनाट्यम को पूर्णतः में जीवित रखा। ई. कृष्णा अय्यर, बालसरस्वती, रुक्मणी देवी अरुन्दाले, कलानीधि और शांताराव उन्हीं लोग में से हैं।

- क्या आपने ध्यान दिया कि *भरतनाट्यम्,* **भ** से भाव, **र** से राग, **त** से ताल तथा **न** से **नाट्य** को दर्शाता है।
- किसी भी नए कलाकार का पहला नृत्य प्रदर्शन तमिल में *'अरंगेट्रम्'* तथा कन्नड़ में *'रंगप्रवेश'* कहा जाता है।
- 'अरंगेट्रम्' का अर्थ पायल पूजा (नूपुर) से है। जिसे तमिल में *'सलगै पूजा'* और कन्नड़ में *'गेजीपूजे'* कहते है। प्राचीन काल में इस नृत्य के विद्यार्थियों को पायल (नूपुर) नहीं पहनाया जाता था, जब तक वे अपना प्रथम प्रतर्शन पूरा न कर लें।

बंगाल की एक लोक कथा

पश्चिमी बंगाल तीन देशों की सीमाओं को छूता है। जिसमें बंगलादेश, नेपाल और भूटान। यह २१ अंश और २७ अंश चौड़ाई में बंगाल की खाड़ी की ओर तथा ८६ अंश और ८९ अंश पूर्व लम्बाई में स्थित है।

पश्चिमी बंगाल भारत के नौ तटवर्ती इलाकों में से एक है। लेकिन यह एक ही राज्य है जिसका क्षेत्रफल काफी विस्तृत और यहाँ अनेक प्रकार के स्थान हैं। यहाँ का मौसम और रहन-सहन भी भाँति-भाँति का है। इसकी सीमा मैदानी तट से लेकर बर्फीली हिमालय की पहाड़ियाँ हैं। यहाँ विश्व की कुछ सबसे ऊँची पहाड़ियाँ और मेंग्रोव जंगल भी हैं। बंगाल उत्तरी-पूर्वी राज्यों का द्वार है। इसका क्षेत्रफल ८८,७५२ वर्ग कि.मी. है, जिसकी जनसंख्यां ८०,२२१,१७१ है।

पश्चिमी बंगाल के सुन्दर वन में स्थिति सदाबहारी वन रॉयल बंगाल टाईगरों के लिए मशहूर हैं। सुन्दर वन को केन्द्रीय सरकार ने प्रोजेक्ट टाईगर योजना के तहत राष्ट्रीय उद्यान घोषित कर दिया।

विधाता और ब्राह्मण

बंगाल के गाँव सोनापारा में एक समय में एक ब्राह्मण रहता था। वह भगवान में विश्वास करता था। परन्तु उसके साथ एक बहुत बड़ा दुर्भाग्य जुड़ा हुआ था कि वह कभी किसी भी अवसर पर पेट भर नहीं खा पाता था। अपना भाग्य बनाने के लिए वह काफी तप करता था। परन्तु धीरे-धीरे

पता चला कि वह यह सब करके अपने भाग्य को नहीं बदल सकता। यही था जो विधाता ने उसके कर्म में लिख दिया था।

एक बार उसे ग्रामाधिकारी के यहाँ भोजन का निमंत्रण मिला। वह बड़ा ही प्रसन्न हुआ। उसने अपनी पत्नी से कहा, ''इस बार मैं आशा करता हूँ कि मैं पेट भर खा पाऊँगा। मेरे कपड़े साफ करके स्त्री कर दो जिससे मैं बड़ा आदमी दिखाई दूँ।''

माड़ी लगा हुआ अच्छा धुला हुआ धोती-कुर्ता पहनकर ब्राह्मण ग्रामाधिकारी के घर चल पड़ा। वह धान के हरे-भरे खेतों तथा काश के सुन्दर फूलों को हवा में झूमते देखते हुए चला गया।

जब द्वार पर पहुँचा तो उसका स्वागत किया गया। वह भोजन करने के लिए बैठा नौकर ने उसके लिए चाँदी की थाली में बड़े सलीके से भोजन परोसा। ब्राह्मण ने जब थाली में परोसी हुई तरह-तरह की पकवाने देखीं तो उसकी आँखे खुली की खुली रह गई। उसमें माछार झोल घीवाला चावल, जलपती-चटनी, आलू पोस्ता और साधारणतः मिस्टी दोई भी थी। इसके अलावा अन्य बीसों पकवान।

सभी कुछ अच्छा चल रहा था। ब्राह्मण भोजन का आनन्द ले रहा था। तभी छीके पर टंगी दही की मिट्टीवाली हाँडी फूट गयी। वह

कला और हस्तकला

पश्चिमी बंगाल अनेक प्रकार की कलाओं तथा हस्तकलाओं के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ हथकरघा से बना 'स्पन' सूती कपड़ा काफी प्रसिद्ध है। थंगाली, धानेकेली जैसे गाँव हथकरघे सूती कपड़ों के लिए प्रसिद्ध हैं तो मुशिर्दाबाद अपने सिल्क सूतों के लिए।

बंकुरा और बिशनपुरा अपने मिट्टी के खिलौने तथा अन्य हस्त कलाओं के लिए जाने जाते हैं। बिशनपुर शहर में प्राचीन टेरोकोटा का एक मंदिर है। यह शहर सीप के गहने बनाने तथा टस्सर सिल्क और बलुचरी साड़ियों के लिए जाना जाता है।

कुमारतुली नामक स्थान पूरे विश्व में मूर्तिकला के लिए प्रसिद्ध है। यह वही स्थान है जहाँ दुर्गापूजा के समय पूरे राज्य में पूजी जानेवाली देवी दुर्गा तथा अन्य देवी देवताओं की आकर्षक मूर्तियाँ बनाई जाती हैं। कहा जाता है कि यहाँ की मूर्तियों से बंगाली सम्प्रदाय को भारत तथा विदेशों में एक अलग पहचान मिली है।

पुरुलिया जिले का प्रसिद्ध छाऊ लोक नृत्य और मार्शल आर्ट अपने में अकेला है। इस नृत्य की प्रसिद्ध छाऊ मिट्टी के मुखौटों से हुई।
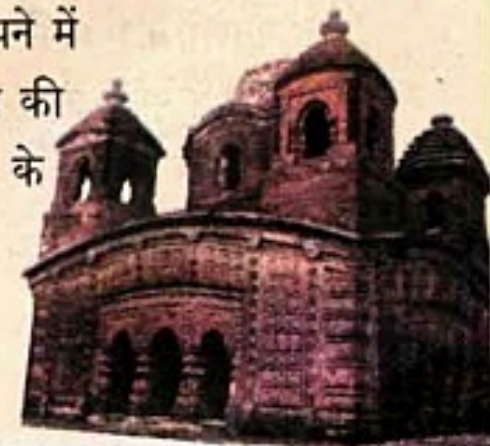
मिट्टी का बर्तन सीधे ब्राह्मण की थाली के पास आकर गिरा। एक बार फिर ब्राह्मण को अपना भोजन अधूरा छोड़कर उठना पड़ा।

जब वह वहाँ से जाने लगा तो राजा ने पूछा "ठाकुरमोशाय! आशा करता हूँ मेरे सेवकों ने आपको भली भाँति भोजन परोसकर मनपसंद भोजन करवाया होगा !" "क्या आपने पूरा खाया?"

ब्राह्मण ने कहा, "महाराज ! वही मैं नहीं कर सका। लेकिन इसके लिए किसी को अपराधी न माना जाय, यह मेरा अपना भाग्य है।" और उसने राजा को अपने भाग्य के बारे में सब कुछ बताया।

महाराज परेशान हुए। उन्होंने कहा,

मेले और त्यौहार

बंगाल में दशहरा दुर्गा पूजा के रूप में मनाया जाता है। यह यहाँ का सबसे महत्वपूर्ण त्यौहार है और यह देवी दुर्गा के महिसासुर पर विजय का प्रतीक है। यह त्यौहार अक्टूबर या नवम्बर माह में मनाया जाता है।

जनवरी माह में मनाई जानेवाली मकर संक्रांति सागरद्वीप का गंगा सागर मेला है। बंगालियों का नव वर्ष अप्रैल में आता है। देवताओं के भवन निर्माणकर्ता विश्वकर्मा की पूजा सभी फैक्टरियों आदि में सितम्बर माह में होती है। इस त्यौहार की सबसे मजेदार बात पतंग उड़ाना है।

दिवाली श्यामा या काली पूजा के रूप में मनायी जाती है।

"ठाकुरमोशय ! कृपया आज रात्रि को भी मेरे ही घर पर रुकें। कल मैं स्वयं खाना परोसूँगा और आप पेट भर खा पायेंगे।" ब्राह्मण ने मान लिया।

दूसरे दिन मछली का पकवान बना। महाराज ने अपने हाथों से भी कई पकवान बनाए। ब्राह्मण खाने के लिए बैठा। वहाँ पर कुछ ऐसा नहीं था जो ब्राह्मण के भोजन में बाधा पहुँचाता। अब विधाता सचमुच परेशान हुए। उन्हें कुछ भी ऐसा रास्ता न सूझा जिससे वे ब्राह्मण का खाना रोक सकें। उन्होंने सोने के मेढक का रूप धरा और ब्राह्मण के चावल में कूद पड़े। ब्राह्मण अपने भोजन में इतना लीन था कि उसे पता ही नहीं कि वह चावल के साथ मेढक को भी निगल गया। उसके बाद ब्राह्मण ने *मिस्टी पान* खाया और अपने घर वापस चल दिया।

जैसे ही वह राजा के खेतों से होकर जा रहा था, उसे एक आवाज सुनाई दी। "आओ ब्राह्मण, ज़रा मुझे बाहर आने दो।" वह इधर-उधर देखने लगा, परन्तु वहाँ कोई नहीं था। वह आगे चलने लगा। फिर से उसने सुना, "ब्राह्मण मुझे बाहर आने दो।"

"के तुमी? तुम कौन हो?" उसने पूछा। "मैं विधाता हूँ।" उत्तर बड़ी तेज आवाज़ में था। "तुम कहाँ हो?" ब्राह्मण ने पूछा।

"मैं तुम्हारे पेट में हूँ। मैं तुम्हारे चावल में सोने का मेढक बनकर आ गया था, परंतु तुमने ध्यान नहीं दिया और मुझे निगल लिया।" विधाता ने कहा। ओह ! तभी मैं सोचूँ कि बिना किसी बाधा के मैंने अपना भोजन कैसे पूरा कर लिया। अच्छा हुआ कि मैं तुम्हें घोंट गया। अब तुम मुझे परेशान नहीं करोगे। मैं तुम्हें वहीं रखूँगा, जहाँ चाहूँगा। मैं तुम्हें जाने नहीं दूँगा। मैंने अपना गला बंद कर लिया था। अच्छा किया ! वेश कराची !"

उसके बाद ब्राह्मण अपना मुँह बंद करके चलने लगा जिससे कि विधाता बाहर न आ सके। उसी समय तीनों लोकों में छाऊ थे। अब यह काम विधाता का था कि वे उस
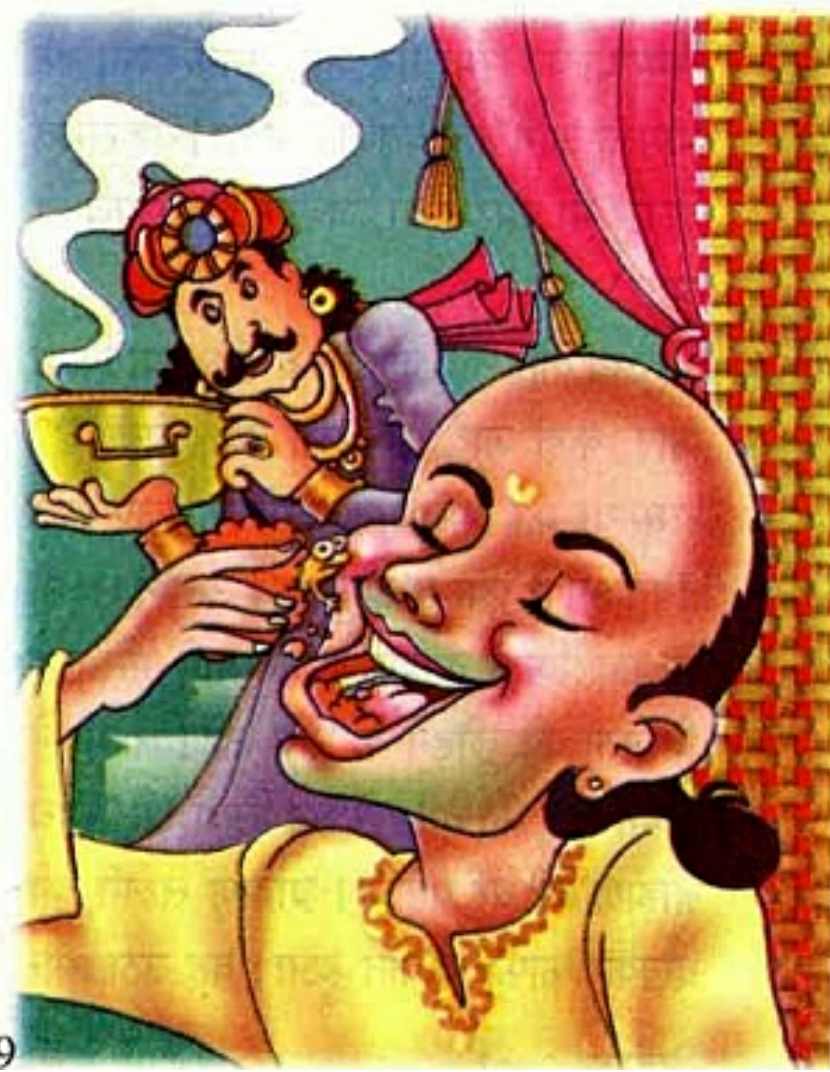
समस्या का समाधान करें। उनके बिना यह मामला आगे नहीं बढ़ सकता था। यह समय उससे भी कठिन था, जबकि विश्व युद्ध हो जाए।

अब कोई नहीं जानता था कि क्या किया जाए, कहाँ जाये, किसका क्या कारण है? समस्या का समाधान करने के लिए सारे देवताओं ने एक सभा बुलाई। उन्होंने लक्ष्मी से कहा कि वे ब्राह्मण के घर जाएं और उसे विधाता को छोड़ने के लिए कहें। लक्ष्मी ने अपने उल्लू को बाँहों में रख लिया और सीधे ब्राह्मण के घर पहुँची। ब्राह्मण लक्ष्मी को देखकर काफी चकित हुआ। वह उठा और आसन देखकर देवी को प्रणाम किया। ''माँ लोक्की ! मैं आपके लिए क्या कर सकता हूँ?'' उसने पूछा।

''क्या तुमने विधाता को कैद कर रखा है। कृपया उन्हें जाने दो। उनके बिना विश्व का कार्य रुक गया है।'' लक्ष्मी ने कहा।

जब उसने यह सुना तो ब्राह्मण को बहुत क्रोध आया। ''मेरी बड़ी वाली लाठी देना'' उसने अपनी पत्नी से कहा। ''मैं इस देवी को बताऊँगा कि क्षमा क्या है। मेरे पूरे जीवन में यह गुस्से से मुँह मोड़े रही और अब पूछती है कि विधाता को छोड़ दो। अभी तो थोड़ा भाग्य मेरा साथ दे रहा है। मैं इसे इतना मारूँगा, जो इसने पहले देखा न हो।''

लक्ष्मी को वास्तव में गुस्सा आया। इससे पहले किसी ने भी इस तरह से बात नहीं की थी। वह वहाँ से सीधे देवताओं के पास गईं और सारा हाल कह सुनाया।

फिर देवताओं ने सरस्वती को भेजा। जब ब्राह्मण ने सरस्वती को देखा तो वह उठा और आदर के साथ उनके सामने झुका। ''मैं आपके लिए क्या कर सकता हूँ, देवी?'' उसने पूछा।

जब सरस्वती ने अपनी प्रार्थना सुनाई तो ब्राह्मण फिर से क्रोधित हो गया। उसने फिर

अपनी लाठी माँगी। ''मैं इस देवी को भी दिखाऊँगा कि क्रोध क्या होता है। मेरे विद्यालय समय से आज तक इसने मुझे कोई ज्ञाना नहीं दिया अब यह चाहती है कि मैं उस विधाता को छोड़ दूँ। जबकि मैंने उसे वहाँ सुरक्षित रखा है ताकि वह मुझे नुकसान न पहुँचा चके। मुझे वह छड़ी दो मैं इसे आज भरपूर सबक सिखाता हूँ।''

बेचारी सरस्वती भी घबराकर चली गई। इस बार भगवान शिव स्वयं ब्राह्मण के घर आये। ब्राह्मण शिव का भक्त था और उसने शिव का आदर सत्कार किया और पूछा कि वह क्या कर सकता है।

शिव ने विधाता को छोड़ने के लिए कहा। ''मेरे भगवान, आपने पूछा है तो मुझे करना पड़ेगा, किन्तु मेरी समस्या का समाधान क्या है?'' मैं बड़ा ही दुःखी जीवन व्यतीत कर रहा हूँ और विधाता इसके कारण हैं।''

तब भगवान शिव ने कहा, ''चिंता मत करो, मैं तुम्हें अपने साथ स्वर्ग ले जाऊँगा और तुम विधाता के चंगुल से बच जाओगे।''

तब ब्राह्मण ने अपना गला खोला और विधाता को बाहर आने दिया। माना जाता है कि शिव भगवान अपने बचन के अनुसार ब्राह्मण और उसकी पत्नी को शरीर तथा आत्मा के साथ स्वर्ग ले गए।
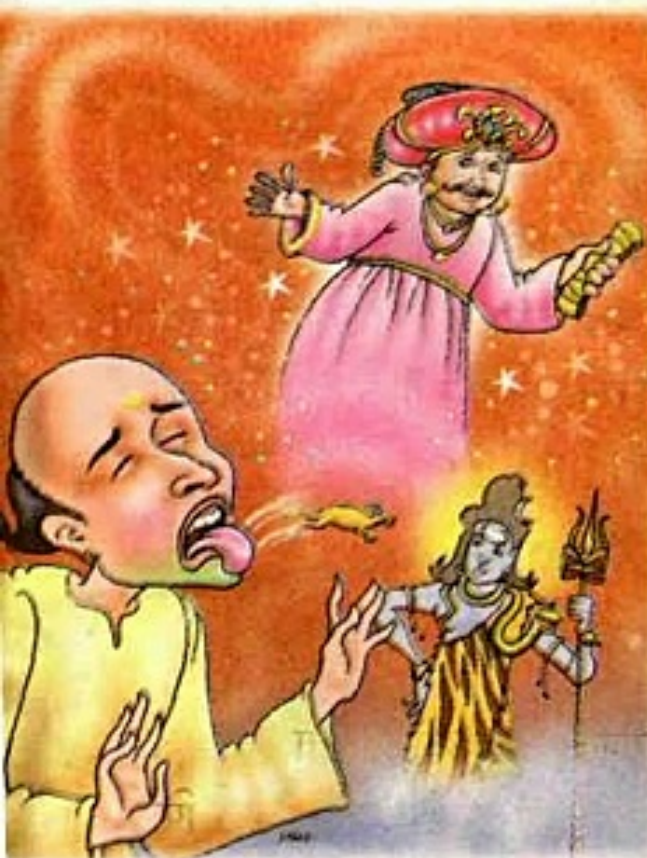
पर्यटन स्थल

पश्चिमी बंगाल की राजधानी कोलकत्ता वह सबसे पुराना शहर है, जो ऐतिहासिक शहर के रूप में जाना जाता है। विक्टोरिया मेमोरियल, हावरा ब्रिज, कालीघाट का काली मंदिर और दक्षिणेश्वर।

हिमालय की पहाड़ियों में बसा दार्जलिंग एक प्रसिद्ध पहाडी स्थान है। टॉय ट्रेन जो सिलुगुरी से दार्जलिंग तक चलती है, वह पर्यटकों का मुख्य आकर्षण है।

दार्जलिंग अपने ठंडे मौसम और सौन्दर्य के लिए जाना जाता है। दार्जलिंग के आसपास पर्यटन स्थानों में कलीमयोंग, कुर्सियांग और 'टाईगर्स हिल्स' हैं।

विश्व की कुछ सबसे अच्छी चाय यहाँ उगायी जाती हैं।

कोलकत्ता के नजदीक ठाकुर रविन्द्रनाथ टैगोर द्वारा स्थापित शिक्षा संस्थान शांतिनिकेतन भी है। विश्व भर में अपने कला और अभिनय के लिए प्रसिद्ध विश्वभारती विश्व विद्यालय यहीं पर स्थित है। पश्चिमी बंगाल की अन्य खूबियों के बारे में आप वहाँ बोली जानेवाली मधुर बंगला भाषा को प्रथम स्थान दे सकते हैं।

हास्यास्पद व्यक्ति - बीरबल

राजसिंहासन पर बैठा हुआ सम्राट अकबर चारों तरफ देखते हुए वह एक पहेली पूछने की सोच रहा था। "कौनसा फूल दुनिया का सबसे अच्छा फूल है?" दरबारी एक दूसरे का मुँह देखते रह गए।

एक ने सोचा वह उत्तर देगा। वह अकबर के नजदीक गया और एक इत्र की शीशी खोली तथा उसमें से एक बूँद अपनी हथेली पर गिरा ली। "तुम्हारा मतलब गुलाब?" सम्राट ने पूछा। दरबारी खुशी से मुस्कुरा पड़ा।

जैसा कि सम्राट ने कोई प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं कि तो एक और दरबारी ने साहस जुटाकर अपना दाँया हाथ आगे किया, जिसकी कलाई पर चमेली का माला बँधा हुआ था। "जहाँपनाह बिना किसी संदेह के चमेली ही सबसे अच्छा फूल है।"

अकबर फिर भी संतुष्ट नहीं दिखाई दिया। इसके बाद एक तीसरा दरबारी सामाने आया और कमल के फूल पर दृष्टि डाली। जो वहाँ के खंभों पर खुदे हुए थे "महाराज खंभों पर कमल के फूल के चित्र बने हुए हैं जाहिर है कि ये आपके पसंदीदा हैं।" अकबर ने अपना हाथ उठाया। दरबारी शांत हो गए।

जैसे ही सम्राट ने फिर से इधर-उधर देखा, एक अन्य दरबारी खड़ा हुआ। वह अकेला व्यक्ति था जिसने यह देखा कि सिंहासन के दूसरी ओर बड़े-बड़े फूलों के गमले रखे हुए थे। ''नीले कुमुदिनी के फूल महाराज ! क्या वे राजशाही तालाबों में नहीं खिलते?''

''चाहे फूलों में चटकीले रंग हों, वे सुगंधित हों, वे गमले में चाहे कितने ही सुंदर लगते हों या दिवारों और खंभों पर शोभायमान होते हो, परंतु... परंतु...'' सम्राट ने वाक्य पूरा नहीं किया। वे बीरबल को ढूँढने लगे। ''बीरबल कहाँ हैं? वे चुप क्यों हैं?''
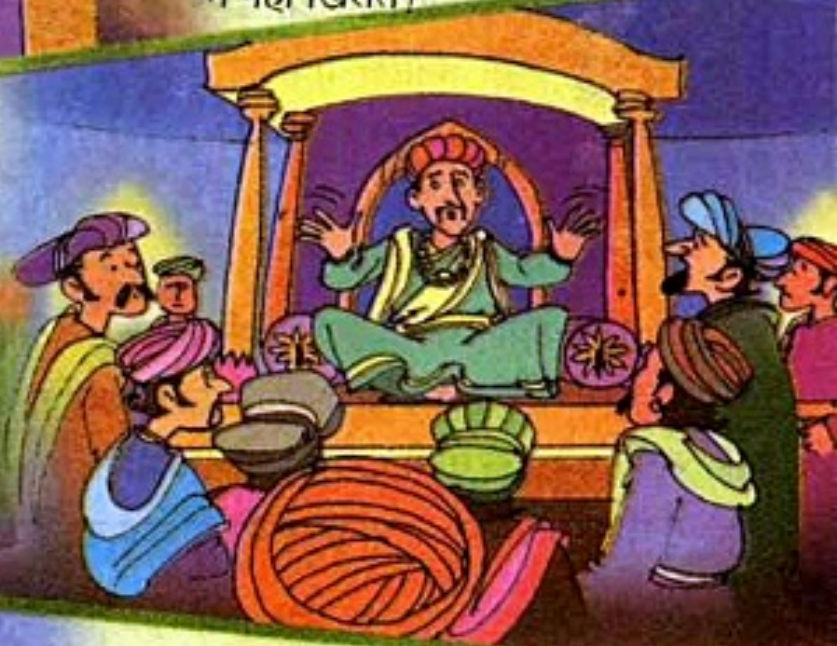
''मैं यहाँ हूँ, सम्राट'', बीरबल ने उठते हुए कहा। ''सबसे उत्तम पुष्प वहीं होता है, जिसे हम अच्छे कार्य के लिए प्रयोग में करते हैं। दरबारियों ने सोचा कि बीरबल का उत्तर सम्राट के प्रश्न से भी जटिल है !

''सम्राट जो वस्त्र हम पहनते हैं वह कपास से आता है ! लेकिन यदि कपास का फूल नहीं होता तो हम कपड़े ही नहीं पहन रहे होते !'' बीरबल ने कहा। अकबर सीढ़ियों से नीचे उतरे और बीरबल को पुरस्कार स्वरूप एक मोती का हार दिया।

पूरे तरीके से व्यक्तिगत

चार महीने पहले ही पूरी दुनिया ने देखा कि यू.एस. के अरबपति श्री डेनिस टिटो, जो प्रथम अंतरिक्ष यात्री हुए, वे दो रशियन अंतरिक्ष वैज्ञानिकों के साथ अंतरिक्ष में गए और एक सप्ताह के बाद वापस आए। उनकी अंतरिक्ष यात्रा ने काफी गलतफहमी फैला दी। एक ब्रिटिश अंतरिक्ष में रुचि रखनेवाले व्यक्ति स्टीव बेनेट जो पहले दंतमंजन के तकनीकी थे, ने भी अंतरिक्ष की यात्रा करने की योजना बनाई है। परन्तु वे कोई विवाद नहीं चाहते। इसीलिए वे नोवा नामक अंतरिक्ष यान बना रहे हैं। जो वर्ष २००१ के अंत तक तैयार हो जायेगा। एक लाख पाउण्ड के रॉकेटे उसे ६२ मील आकाश में ले जायेंगे। यह भी सच है कि वह स्वयं ही ३० फीट लम्बे जहाज को स्वयं ही चलायेंगे, जो ६,४०० कि.मी. प्रति घंटे की रफ्तार से चलेगा। जब तक यह जहाज बनकर तैयार हो रहा है, श्री बेनेट अपने को तैयार कर रहे हैं कि वे अंतरिक्ष यात्रा कैसे करेंगे!

बस यूँ ही

खेलों में अभिरुचि रखनेवाले एक व्यक्ति ने पेरिस के आइफिल टावेर से पैराशूट के साथ छलाँग लगाई। जब वह नीचे उतरा तो देखा कि पुलिस वाले उसे हिरासत में लेने के लिए तैयार थे। ''लेकिन मैंने कोई कानून नहीं तोड़ा है? क्या मैंने कभी ऐसा किया?'', उसने सफाई दी। वे एक दूसरे को देखने लगे कि कानून में कहाँ गलती हुई है? लेकिन कुछ भी नहीं थी। उससे भी अधिक उसने अपनी कोई हड्डी भी नहीं तोड़ी थी। पुलिस ने उससे पूछा कि किस बात ने उसे यह भयानक खेल खेलने का जुनून दिया। ओहो! यह तो मैंने बस मजाक में कर दिया!'' वह हँसते हुए बोला।

अदालती चक्कर

अक्सर यह होता है कि यदि आप किसी पर हँसना चाहते हैं तो सबसे पहली शरारत आपको यह सूझती है कि जब वह किसी कुर्सी पर बैठनेवाला होता है तो आप कुर्सी को झटके से खींच लेते हैं।

ऐसा ही एक मजेदार किस्सा 'न्यूयार्क' के एक कानूनी महाविद्यालय में घटित हुआ। प्राध्यापक यह पाठ पढ़ा रहे थे कि आप किस प्रकार मुकदमा दायर करके बहस कर सकते हो। वह इस बात का जीवित उदाहरण देना चाहते थे। तभी एक छात्रा भीतर प्रवेश करके अपनी कुर्सी पर बैठने ही वाली थी कि प्राध्यापक ने उसकी कुर्सी खींच दी। छात्रा को काफी चोट लगी। और उसने प्राध्यापक पर ५ लाख डालर का जुर्माना ठोंक दिया।

समाप्ति की कगार पर

हम लोग इन सबके प्रति तो जागरुक हैं कि पशु-पक्षी, पेड़-पौधे आदि जो लगभग समाप्त होने की स्थिति में हैं और कुछ तो समाप्त भी हो चुके हैं। अब प्रकृति के इस विनाश में हम भाषाओं को भी शामिल कर सकते हैं। इसका एक उदाहरण अमेरिका के सबसे बड़े प्रांत अलास्का में बोली जानेवाली एक भाषा 'इयाक' थी। जिसे जाननेवाला मात्र एक व्यक्ति है। जिनका नाम सुश्री मैरी स्मिथ है। जिनकी उम्र तिरासी वर्ष है। इन महिला की मृत्यु के समय भी कोई इस भाषा को जाननेवाला नहीं होगा।

यूनेस्को के सर्वेक्षण के अनुसार पूरी दुनिया में कुछ ६,८०० भाषायें ऐसी भी हैं। जिन्हें बोलनेवाले मात्र २,५०० लोग बचे हैं। उनमें ९०% भाषायें आगामी १०० वर्षों में सम्भवतः समाप्त हो जायेंगी। अन्यथा मात्र १०० या हजार लोग इनका प्रयोग करें विश्व दर्शन संस्थान कह रहा है कि "भाषा की मृत्यु उस देश की संस्कृति को समाप्त कर देती है।"

उचित भेंट

रंजीत पंद्रह साल का है। पर बड़ा ही सुस्त है। कोई भी काम करने को उसका जी नहीं चाहता। खेलना-कूदना, पेट भर खाना, घोड़े बेचकर सोना उसे बहुत प्रिय है। कोई भी काम करने से वह दूर भागता है।

उससे कहा जाए कि ज़मीन खोदो, पौधे रोपो, पानी दो तो वह कहने लगता है, भूदेवी को चोट पहुँचना मुझसे नहीं होगा। उससे कहा जाए कि कम से कम पौधों को पानी दो तो वह कह बैठता है कि उन्हें जुकाम हो जाएगा। पेड़ पर चढ़कर फल तोड़ने के लिए कहा जाए तो उसका जवाब है कि मुझे देखकर पक्षी डर जाते हैं और वे उड़ जाते हैं और यह काम उसे क़तई पसंद नहीं। यों उसके पास हर काम से बचने का उपाय है, बितर्क है।

माँ उससे कहे कि कम से कम घर में काम करो, दरबाज़े साफ करो, फर्श साफ़ करो तो वह कहने लगता है "माँ, घर को तुम इस तरह साफ़ रखती हो कि मुझे कुछ भी साफ़ करने की ज़रूरत ही नहीं है। मेरी समझ में ही नहीं आता कि कौन सा दरवाज़ा साफ़ करूँ और कौन-सा नहीं !"

पढ़ने का काम भी वह ज्यादा देर तक नहीं करता। वह पुस्तक लेकर बैठता है, पन्ने उलटता है और फिर उठ जाता है। उससे पूछा जाए तो अपने को एकाग्रचित्त कहकर बात टाल देता है। खेलों पर ज्यादा समय खपाने पर माँ नाराज़ हो उठती हैं तो यह कहकर उनकी बात काट देता है कि खेल अच्छी कसरत है और यह शरीर के लिए बहुत ही आवश्यक है।

माँ-बाप उसकी हाजिर-जवाबी से बहुत ही खुश होते हैं और उसे कोई काम नहीं सौंपते।मन ही मन उसकी अक्लमंदी की बाहवाही करते हैं। सच कहा जाए तो रंजीत नटखट कहीं है। गुरू भी उसकी अक़्लमंदी की तारीफ़ करते रहते हैं।

एक दिन रंजीत के मामा शंकर उसके घर आया। रंजीत का रवैय्या उसे अच्छा नहीं लगा। उसने अपनी दीदी से कह डाला "दीदी, अगर यही सिलसिला जारी रहा तो यह निकम्मा बन जाएगा। कैसे भी हो, इसे सुधारना होगा।"

- रम्या कौशिक -

''वह तो होशियार है, पर मानती हूँ कि वह सुस्त जरूर है। तुमसे बन सके तो सुधारो उसे।'' दीदी ने कहा।

शंकर ने उसे सुधारने का निश्चय किया। उसने रंजीत को बुलाकर कहा ''अरे भानजे, आम के इस पेड में फल ही फल हैं। सौ आम तोड़कर बाज़ार में बेचोगे तो कम से कम एक सौ पचास रूपये मिलेंगे। आधी रक़म तुम लो और आधी रक़म मुझे दो। पेड़ पर चढ़ जाओ और फल तोड़ो। मैं इन्हें बाज़ार में बेचूँगा।''

रंजीत ने हसँते हुए कहा ''इतने से छोटे काम के लिए मुझे पेड़ पर चढ़ने की क्या ज़रूरत है और बाज़ार में ले जाकर उन्हें तुम्हें बेचना क्यों? नौकर रामू को बुलायेंगे, उससे फ़ल तुड़वादो और वही बाज़ार में बेच आयेगा और हमें पैसे दे देगा''।

शंकर उसकी बातों पर चकित होते हुआ बोला ''अरे, तुम तो बहुत कुछ जानते हो। इतने होशियार हो पर काम करने से दूर क्यों भागते हो?''

''मामा, मैं काम नही करता इसीलिए पिताजी ने माली को नौकरी पर रखा। माँ ने नौकरानी को रख लिया। यों उन्हें भी जीने का एक आधार मिल गया न? उनका काम मैं खुद करूँ तो बेचारों पर क्या गुज़रेगी। उनका पेट कैसे भरेगा? वे कैसे जी सकेंगे?'' रंजीत ने अपने समर्थन में यों कहा।

उसकी वाक्पटुता पर चकित होते हुए शंकर ने उससे कहा ''तो ऐसा क्यों नहीं करते? तुम काम करो और वह रक़म उन्हें दान में दो।''

रंजीत ने निधड़क कहा ''बेशर्म ही दान-धर्म करते हैं। स्वाभिमानी अपने परिश्रम का फल पाते हैं। हमें चाहिये कि हम स्वाभिमानीयों का ही आदर
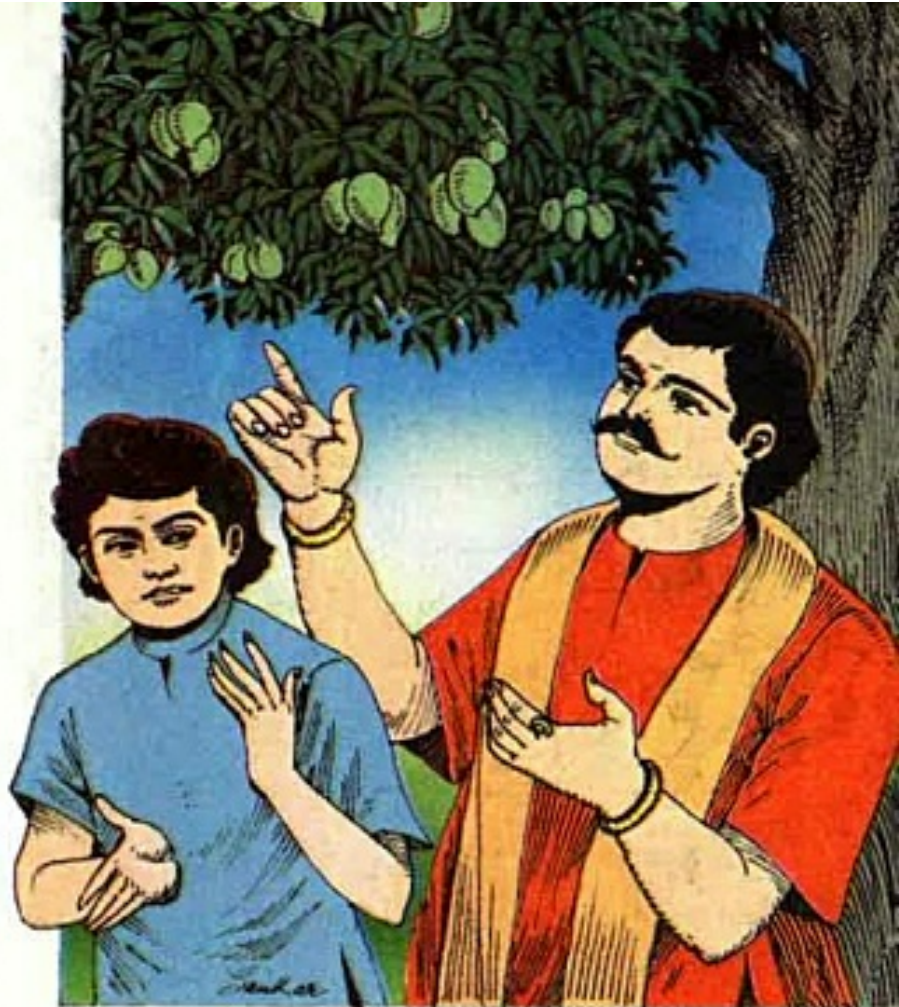
करें न कि सुस्तों व बेशर्मों का। ऐसे लोगों को प्रोत्साहन देना नहीं चाहिये।''

अब शंकर की समझ में आ गया कि उसका भानजा आवश्यकता से अधिक अक़लमन्द है और बातों से उसे जीता नहीं जा सकता। फिर भी शंकर ने ठान लिया कि किसी भी हालत में उससे काम करवाकर ही रहूँगा। दिन भर वह गाँव भर में घूमता रहा और वहाँ की ख़ास-ख़ास बातों को जान गया। रात को भोजन करते हुए उसने रंजीत के माँ-बाप से कहा ''राजा की दुकान में जो लोग चावल खरीदते हैं उन्हें पाव सेर चिड़वा मुफ़्त दे रहे हैं। वीर की दुकान में जो दो साड़ियाँ खरीदेंगे, उन्हें एक धोती मुफ़्त दी जायेगी। सोम की दूकान में दो गुड़ियाँ खरीदनेवालों को एक गुडिया मुफ़्त दी जा रही है। लगता है, आपके गाँव के व्यापारी दानी है।''

रंजीत भी यह सब कुछ सुन रहा था। उसने
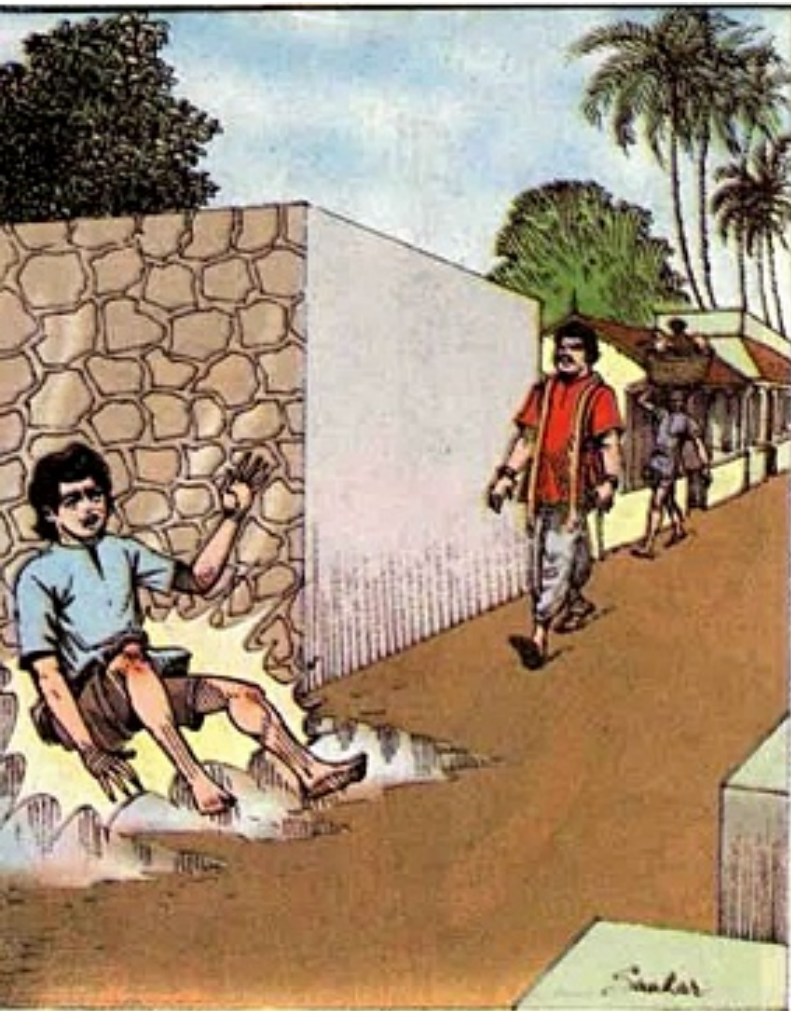
तुरंत कहा ''अपनी चीजों को बेचने के लिए व्यापारीयों की यह चाल है। वे लोगों को आकर्षित करने के लिए ऐसा जाल फैला रहे हैं। यह दान नहीं कहलाता। इस दान से भी उन्हें फ़ायदा ही होगा। किन्हीं और चीजों को अधिक दाम पर बेचकर इस नुक़सान को फ़ायदे में बदल लेंगे। मेरा मतलब है, राजा की दुकान में चावल, बीर की दूकान में साड़ियाँ, सोम की दुकान में गुड़ियाँ मात्र सस्ती होंगी। बाकी चीजों के दाम अधिक होंगे। इसलिए अक़लमन्दों को चाहिये कि वे वही चीजें उनकी दुकानों में खरीदें, जिनके दाम उचित हैं।''

''ठीक है। मानता हूँ कि तुम अक़्लमन्द हो। कल ही तुम्हें इन तीनों की दूकानों पर जाना होगा और चावल, साड़ियाँ व गुड़ियाँ खरीदकर लाने होंगे।'' शंकर ने चुनौती दी।

रंजीत की समझ में नहीं आया कि क्या किया जाए। उसे काम करना अच्छा नहीं लगता। वह शंकर की चाल को समझ नहीं पाया। तैश में आकर उसने 'हाँ' कह दिया।

सबेरा हो गया। सभी जाग गये पर रंजीत अब भी सोया हुआ था। माँ ने उसे ज़बरदस्ती जगाया तो उसने बहाने बनाये। कहने लगा सिरदर्द, पेटदर्द है और थकावट महसूस कर रहा हूँ। बेचारी ने घबराकर वैद्य को बुलाया। वैद्य गोलियाँ देकर चला गया, फिर भी खाट पर ही लेटे रहकर रंजीत कराहने लगा। माँ-बाप ने उसपर ज़ोर डाला, पर उसने एक बूँद पानी तक नहीं पिया।

शंकर को मालूम हुआ कि दूकानों में मुफ़्त में भेंट में देने का वह आखिरी दिन है। वह खुद चला गया। जैसे ही शंकर घर से निकला, रंजीत उठ बैठा। पेट भर खा लिया और खेलने चला गया।

इतने में चीज़े खरीदकर शंकर लौटने लगा। उसने उन चीजों को लाने का भार एक कुली को सौंपा। लौटते समय उसने खेलते हुए रंजीत को देख लिया। उसने सोचा तक नहीं था कि उसका भानजा इस क़दर उसे धोखा देगा।

रंजीत ने भी शंकर को देखा। वह अपने मामा की नज़र से बचना चाहता था इसलिए छिप जाने के प्रयत्न में वह एक जगह पर फिसल गया। वहाँ एक पत्थर से टकरा गया और उसके घुटने को चोट लगी।

मामा ने उसकी मदद करने अपना हाथ बढ़ाया, पर खुद उठने के प्रयास में रंजीत फिर से गिर पड़ा और इस बार पाँव की उँगलियों को चोट पहुँची। तब शंकर ने अपना पूरा बल लगाकर उसे उठाया और कहा ''तबीयत के खराब होने का बहाना लिया और मुझे बाहर भेज दिया, अब मेरी ही

आँखों के सामने खेलने पर तुल गये। तुम्हारा इतना साहस, मेरे ही साथ बड़ा नाटक?'' नाराज होते हुए कहा।

''तुमसे छिपना चाहता था, इस प्रयत्न में दुर्भाग्यवश मैं फिसल गया और मैं घायल हो गया। क्या इससे यह साबित नहीं होता कि मैं तुम्हारी कितनी इज्जत करता हूँ।'' यों कहकर अपना पाँव उसे दिखाया।

घाव को देखते हुए शंकर की आँखों में आंसू भर आये और उसने कहा ''जो हो गया, सो हो गया। मैने जब हाथ बढ़ाया, तब पकड़ सकते थे न? बेकार अपनी उंगलियों को ज़ख्मी कर लिया।'' एक और जगह पर चोट लग गयी।''

''ऐसी कोई बात नहीं मामा। यह छोटी सी चोट बड़ी चोट के एवज में मुफ़्त में मिली भेंट है।'' रंजीत ने हँसते हुए कहा।

इन बातों को सुनते हुए शंकर अपनी हंसी रोक नहीं सका। उसने उसकी पीठ थपथपाते हुए उसकी तारीफ़ की और घर पहुँचने के बाद उसने सबसे कहा ''वाक्चातुर्य में रंजीत की बराबरी का कोई है ही नहीं। उसमें लोकज्ञान है। तकलीफ़ों में भी वह खुद हंस सकता है और दूसरों को भी हंसाने की शक्ति रखता है। इसीलिए भूदेवी ने भी उसे बड़ी चोट के साथ छोटी चोट भी मुफ़्त में भेंट के स्वरूप दी है।''

पर उस दिन से रंजीत में बड़ा ही अच्छा परिवर्तन आया। वह घर का काम-काज खुद ही संभालता था, और साथ ही दूसरों का कहा काम भी करता था। अगर उससे पूछा जाए कि उसके इस परिवर्तन का कारण क्या है तो वह कहता ''मामा को धोखा देने के कारण मैने उस दिन दो चोटें खायीं। मुझे लगा कि भूदेवी ने मेरे व्यवहार पर दो उचित भेंटें दी। ऐसे उचित भेंटें पाने केलिए मैने अपनी व्यवहार-शैली को बदलने का निश्चय किया।''

''काम से जी चुराने के विषयों में ही नहीं बल्कि कामों को करने में ही अपनी अक़्लमंदी दिखानेवाले असल में अक़्लमन्द हैं। आज से हमारा रंजीत असली अक़्लमन्द है'' यों कहते हुए रंजीत के माँ-बाप बहुत खुश हुए।

अपने भारत को जानो

प्रश्नोत्तरी

जाने माने दार्शनिक और विद्यवान डॉ.एस. राधाकृष्णन का जन्म ५ सितम्बर को हुआ। जो बाद में भारत के द्वितीय राष्ट्रपति बने। यह दिवस शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाता है। इस महीने की प्रश्नोत्तरी शिक्षा पर आधारित है।

१. प्राचीन भारत में कौनसा स्थान अध्ययन का केन्द्र माना जाता था ?

२. विश्व भारती विश्वविद्यालय की स्थापना किसने और कब की?

३. चेन्नई में कला, नृत्य तथा संगीत का सबसे जानामान विद्यालय कौनसा है? इसके निर्माणकर्ता कौन हैं ?

४. योजना भवन द्वारा नई शिक्षा पद्धति कब लागू की गई ?

५. भारतीय अतिरिक्त अध्ययन संस्थान कहाँ हैं ?

६. बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय का निर्माण किसने करवाया?

७. भारत के भूतपूर्व राष्ट्रपति स्व. जाकिर हुसैन एक विश्वविद्यालय से जुड़े हुए हैं। वह कौनसी यूनिवर्सिटी है?

८. महात्मा गाँधी ने शिक्षा पद्धति पर एक उपन्यास को काफी ख्याति दिलवाई उसका नाम क्या था ?

९. नेहरु के मंत्रीमंडल में शिक्षा मंत्री कौन था ?

१०. कलकत्ता, मद्रास तथा मुम्बई के विश्वविद्यालय एक ही वर्ष में बनाए गए। वह वर्ष कौनसा था ?

११. अंग्रेजी, शिक्षा का माध्यम किस वर्ष में घोषित की गयी ?

१२. मशहूर शिक्षाविद ने यूनेस्को के डिप्टी डायरेक्टर के रूप में काम किया। वे कौन भारतीय थे ?

१३. कौरवों और पाण्डवों को धनुष विद्या किसने सिखाई ?

१४. केरल का वह कौनसा शहर है, जहाँ नृत्य के रूप में वहाँ की परम्परा दिखाई जाती है ?

१५. एक प्राचीन विश्वविद्यालय में एक चिकित्सा केन्द्र है। वह कौनसा है ?

(उत्तर अगले माह)

अगस्त माह की प्रश्नोत्तरी का उत्तर

१. तृतीय नेटिव कवेलरी।

२. एक अंग्रेज आदमी, जिसे ए.ओ. ह्यूम कहा जाता था।

३. डब्लू.सी. बैनर्जी (मुम्बई १८८५)।

४. लाला हरदयाल।

५. ५ फरवरी १९२२ को गोरखपुर जिले में।

६. १३ अप्रैल १९१९.

७. लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक।

८. १९१५.

९. जतिन मुखर्जी।

१०. सर तेजबहादुर सप्रु और एम.आर. जया।

११. भगत सिंह।

१२. १९४३ में सिंगापुर में।
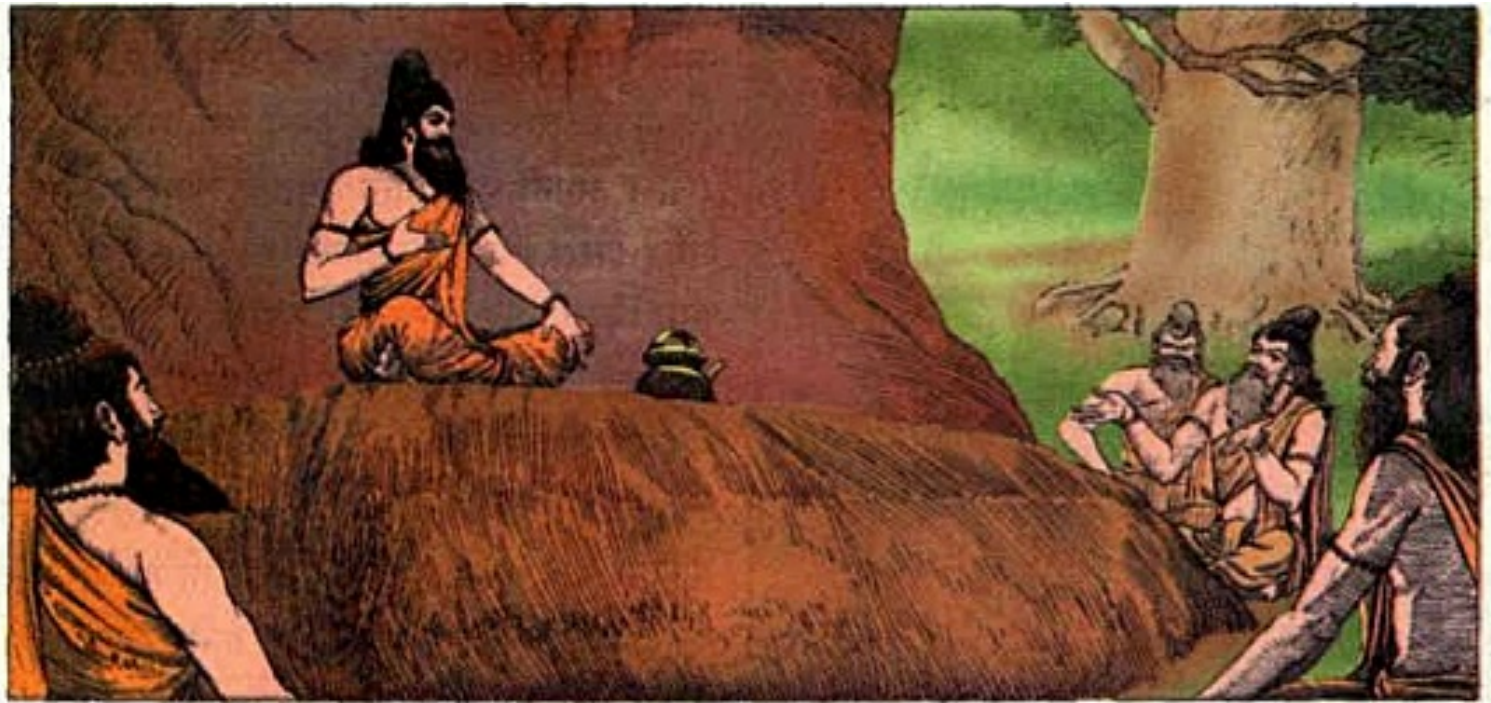
देवी भागवत

सूत बताने लगे कि ब्रह्मा की प्रार्थना के अनुसार योगनिद्रा के चले जाने के बाद विष्णु नींद से जागे। उनके इस कथन पर मुनियों ने आपत्ति उठायी और कहने लगे ''हमने सुना था कि ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर सृष्टि की स्थिति के कारक हैं। हमने यह भी सुना कि इन तीनों में से विष्णु सर्वोत्तम हैं। ऐसे विष्णु जब योगनिद्रा में सुसुप्त हैं, तब उनकी शक्ति व तेजस्विता का क्या हुआ? आदिशक्ति को इनसे बढ़कर शक्ति कहाँ से मिल गयी? हमने सुना कि विष्णु ही समस्त कारणों के कारक हैं। पर तुम तो बता रहे हो कि आदिशक्ति ही समस्त कारणों का मूल है। हम समझ नहीं पा रहे हैं कि सच क्या है?''

सूत ने यों कहा :

''मुनिगण, आपके प्रश्न का उत्तर ध्यान से सुनियेगा। नारद आदि महामुनियों ने भी आदिशक्ति के अपार प्रभाव को समझ न सकने के कारण विष्णु को ही सर्वशक्तिमान समझा। परंतु यह केवल उनका भ्रम मात्र था। इसी प्रकार औरों के बारे में भी भिन्न-भिन्न अभिप्राय रहे। किसी ने शिव को भगवान माना तो किसी ने सूर्य को। किसी ने अग्नि को वह स्थान दिया तो किसी ने चन्द्र को। वे अपने-अपने भ्रम से बाहर नहीं आ सके। चाहे कोई कैसा भी प्रमाण प्रस्तुत क्यों न करे, पर सच तो यह है कि अनंततः आदिशक्ति ही सच्ची शक्ति है। यह शक्ति विष्णु में, शिव में, सूर्य में, वायु में, अग्नि में दिखायी पड़ती है।''

ऐसी शक्ति से जगाये गये विष्णु ने ब्रह्मा को देखकर कहा, ''पुत्र, तपस्या छोड़कर यहाँ क्यों आये? तुम्हारी चिंता का क्या कारण है?''

''अब मैं तपस्या कैसे कर पाऊँगा। यह कैसे संभव होगा? तुम्हारे दो कानों से मधुकैटभ नायक दो राक्षस जन्मे हैं और मुझे मार डालने की धमकी

२. मधु कैटभ का वध-शुक का जन्म

दे रहे हैं। वे युद्ध करने ललकार रहे हैं।'' ब्रह्मा ने कहा।

''इतनी सी बात पर डर गये? मेरे हाथों से कितने बड़े-बडे राक्षस नहीं मरे!'' विष्णु यह कह ही रहे थे कि इतने में वे दोनों राक्षस वहाँ आ गये और ब्रह्मा से कहने लगे, ''यहाँ छिपे हो? तुम्हें ढूँढना हमारे लिए क्या मुश्किल है? क्या यह तुम्हारी रक्षा करेगा? अकेले ही क्यों नहीं मरते, अपने साथ इसे भी क्यों ले जाना चाहते हो?''

विष्णु ने ब्रह्मा को अपने पीछे आने का संकेत दिया और राक्षसों से कहा, ''जो मुँह में आया, मदमत्त होकर बके जा रहे हो। ठहरो, अभी तुम दोनों को ठिकाने लगाता हूँ।'' फिर वे उनसे युद्ध करने सन्नद्ध हो गये।

विष्णु और राक्षस मधु के बीच जो घमासान युद्ध शुरु हुआ, वह आकाश से देवी देख रही थीं। समुद्र उमड पडा। मधु को थका-मांदा देखकर कैटभ विष्णु के साथ मल्ल युद्ध करने लगा। अब दोनों राक्षस अपनी पूरी शक्ति लगाकर विष्णु से लड़ने लगे। इससे विष्णु बलहीनता महसूस करने लगे। क्या किया जाए, उन्हें नहीं सूझा। वे निर्णय नहीं कर पाये कि राक्षसों को कैसे मार डाला जाए? अब वे स्वयं अपनी रक्षा की चिंता में लग गये।

विष्णु को सोच में पड़ा देखकर उन राक्षसों ने कहा, ''युद्ध करने की शक्ति न हो तो हमारा दास बन जाओ। झुककर हमें प्रणाम करो। तुमने ऐसा नहीं किया तो पहले तुम्हें मार डालेंगे और फिर ब्रह्मा को।''

विष्णु ने धीमे स्वर में उनसे कहा, ''थकेमांदे को, पलटकर जानेवालों को, भयभीत को, युद्ध क्षेत्र में गिरे हुए मनुष्य को मारना वीरधर्म नहीं है। आप दो हैं और मैं अकेला। कुछ क्षण विश्राम लेकर फिर से तुमसे युद्ध करूँगा। क्या तुम दोनों युद्ध धर्म से अनभिज्ञ हो?''

''ठीक है, विश्राम करो। हम भी विश्राम करेंगे।'' दोनों राक्षसों ने कहा। तब विष्णु ने अपनी दिव्य दृष्टि से जाना कि इन दोनों राक्षसों को वरदान प्राप्त हो चुके हैं। वे अपने ही आप कहने लगे, ''अनावश्यक ही मैं इनसे युद्ध करने लगा। वरदान के बल पर इनकी मृत्यु नहीं होगी। ये मृत्यु से मुक्त हैं। फिर भला इन्हें कैसे मारा जा सकता है?'' उनमें तनाव बढ़ता गया। आखिर उन्होंने जगदांबा का स्मरण किया।

''माते! तुम्हारी सहायता के बिना इस राक्षस को मारना मेरे लिए संभव नहीं है। शायद वे ही मेरा अंत कर डालेंगे। तुम्हीं ने इन्हें वर दिया था। तुम्हीं

को अब बताना होगा कि ये कैसे मारे जा सकते हैं।'' विष्णु ने मन ही मन जगदांबा से पूछा।

विष्णु की दीनता पर देवी मुस्कुरायी और बोली, ''राक्षसों को अपनी माया से ढ़क दूँगी, फिर उनपर विजय पाना।''

राक्षस विष्णु से कहने लगे ''अपनी हार पर इतना क्यों घबराते हो? जय-पराजय शूर-वीर के जीवन में स्वाभाविक हैं। तुम्हारे हाथों कितने राक्षस नहीं हारे? क्या विजय चिरस्थायी है?'' ताना देते हुए उन्होंने कहा।

विष्णु एकदम क्रोधित हो उठे और उन्हें अपनी मुट्ठी से ज़ोर से मारा। रक्त उगलते हुए उन दोनों ने विष्णु की छाती पर अपना पूरा बल लगाकर मुक्का मारा। यों उनमें भीषण मुष्टि युद्ध होने लगा। बिल्कुल ही थके विष्णु ने उस समय आकाश में देवी को देखा।

उसी समय देवी ने राक्षसों पर कामदेव के बाणों जैसी दृष्टि पसारी। बस, राक्षस युद्ध की बात भूल गये और मोह-पाश में बंध गये। उस स्थिति में विष्णु ने राक्षसों से कहा, ''मैंने कितने ही राक्षसों का सामना किया, किन्तु युद्ध-विद्या में तुम जैसे निपुणों को आज तक नहीं देखा। तुम्हारा युद्ध-नैपुण्य देखकर मैं बहुत प्रसन्न हुआ। तुम्हारी अपनी कोई इच्छा हो तो प्रकट करना। मैं पूरी करूँगा।''

देवी के प्रभाव के कारण मायामोह में पड़े राक्षसों में विष्णु की इन बातों पर रौद्र भर आया। उन्होंने कहा, ''हम थोड़े ही तुमसे माँगनेवालों में से हैं। तुम चाहो तो माँगो, हम तुम्हें देंगे।''

''तो क्या मेरा माँगा दोगे? मेरे युद्ध-नैपुण्य को

देखकर तुम्हें आनंद पहुँचा हो तो मेरे हाथों मर जाओ।'' विष्णु ने कहा।

राक्षस विष्णु की इस माँग को सुनकर स्तंभित रह गये। फिर सोच-विचारने के बाद उन्होंने कहा, ''अपने वादे के पक्के हो तो याद रखना, तुमने भी हमें वर देने का वचन दिया। हमें ऐसे विशाल प्रदेश में मारना, जहाँ बिल्कुल पानी ही नहीं है। इसी शर्त पर हम तुम्हारे हाथों मरने तैयार हैं।''

विष्णु इस पर हंस पड़े और अपनी जांघ को विस्तृत करते हुए बोले, ''राक्षसों, आ जाना।''

राक्षसों ने अपने शरीरों को विष्णु की जांघों से भी अधिक बड़ा किया। राक्षस अपने शरीरों को विस्तृत करने गये तो विष्णु अपनी जांघों को। देखते-देखते विष्णु की जांघें ही राक्षसों के शरीरों से बड़ी हो गयीं। तब विष्णु ने अपने चक्र का स्मरण किया। उससे राक्षसों का वध हुआ। उनके मस्तिष्क

पानी में गिरे और वहाँ एक टीला बन गया। तब से लेकर भूमि का नाम पड़ा मेदिनि।''

व्यास की तपस्या

सूत की कही सारी बातों को सुनने के बाद मुनियों ने कहा, ''तुमसे हमने कई बातें सुनीं और जानीं। किन्तु उस व्यास की बात तुमने नहीं कही, जो पुत्र-प्राप्ति के लिए तपस्या करने निकले।''

सूत ने व्यास की तपस्या के बारे में मुनियों से यों कहा :

नारद के कहे मंत्र का जप करते हुए स्वर्णगिरि पर कर्णिकार वन में व्यास ने तपस्या प्रारंभ की। अपनी संपूर्ण शक्ति को समेटकर जब वे तपस्या करने लगे तब भूमि और आकश काँप उठे। वह डर गये और देवताओं को लेकर शिव के पास गये और विनती की ''व्यास तीव्र रूप से तपस्या-मग्न हैं। लगता है, हम लोगों पर बड़ी विपत्ति आ पड़ी है। हमारी रक्षा कीजिए।''

''तपस्वियों का अहित करना नहीं चाहिए। वे दूसरों का अहित नहीं करते। व्यास पुत्र के लिए शक्ति संपन्न मुझे स्मरण कर रहे हैं। इसी के लिए वे तपस्या मग्न हैं।'' उन्होंने देवताओं को यों समझाया और व्यास के सामने प्रत्यक्ष हुए। उनकी इच्छा पूरी की। अब व्यास आश्रम लौटे।

उन्होंने अग्नि प्रज्वलित करने के बाद कहा, ''क्या कोई ऐसी स्त्री है, जो इस अग्नि समान पुत्र को प्रदान कर सकती है? जो भी हो, स्त्री एक प्रतिबंधक है।'' ऐसा जब वे सोचने लगे तब उन्होंने आकाश में धृताची को देखा। पास ही उन्हें कामदेव भी दिखायी पड़े। व्यास कामदेव के प्रभाव में आ चुके थे, फिर भी वे अपने आप कहने लगे, ''यह मुझे

धोखा देने ही आयी होगी। इसके साथ सुखी जीवन बिताऊँ भी तो इससे क्या नष्ट होगा? इसे अपना बना लूँ तो कहीं मुनि मेरी हंसी तो नहीं उड़ायेंगे? मेरा विश्वास करके, मुझे अपना मानकर क्या यह मुझे सुख पहुँचायेगी? कहीं यह मुझे पुरुव तो नहीं बना देगी, जिसे उर्वशी ने विरह-वेदना में तपा दिया?''

घृताची को भी इस बात का भय था कि व्यास कहीं उसे शाप न दे डालें। वह तोता बन गयी और उड गयी। फलस्वरूप अग्नि के लिए मथित अरणि से शुक का जन्म हुआ। व्यास शुक को देखते ही कहने लगे, ''यह कैसा अद्‌भुत है। यह शिव की महिमा ही होगी।'' वे अपने पुत्र को गंगा नदी में ले गये, स्नान करवाया और कर्मकांड किया। आकाश में देव दुंदभियाँ बजीं। भूमि पर पुष्प-वर्षा हुई। नारद जैसे मुनियों ने गाना गाया। रंभा आदि अप्सराएँ नाचीं।

तोते का रूप धारण करनेवाली स्त्री की वजह से चूँकि पुत्र पैदा हुआ, इसलिए व्यास के पुत्र का नाम शुक पडा। बालक क्रमशः बढ़ता गया। शुक के लिए आकाश से हिरन का चर्म, दंड, कमंडल आ गिरे। व्यास ने अपने पुत्र का यज्ञोपवीत संस्कार किया और बृहस्पति के पास वेदाभ्यास करवाया।

विद्याभ्यास की समाप्ति के बाद गुरु दक्षिणा देकर शुक पिता के पास आ गया। अध्ययन करके लौटे अपने पुत्र को देखकर व्यास अत्यंत संतुष्ट हुए। उन्होने उसका विवाह कराना चाहा। पर शुक ने विवाह के पस्ताव को अस्वीकार किया और पिता से वैराग्य तत्व के उपदेश की अभ्यर्थना की।

''मन को वश में रखते हुए उसे निर्मल व स्वच्छ बनाये रखना ही मुक्ति का मार्ग है। मुक्ति के लिए कोई और बंधन नहीं हो सकते। न्यायपूर्वक धन कमाना, झूठ न बोलना, स्वच्छता I पालन करना, अतिथियों का आदर, योग्य दान देने रहना गृहस्थी के कर्तव्य है। इन कर्तव्यों का पालन करते हुए वह मुक्ति पाता है। इसीलिए वसिष्ठ जैसे महर्षियों ने गृहस्थाश्रम स्वीकार किया। तुम भी सुयोग्य कन्या से विवाह रचाओ और अपने पितृदेवताओं को संतुष्ट करो।'' व्यास ने कहा।

इतना समझाने के बाद भी शुक का मन वैराग्य तत्व मेय ही लगा रहा। यह जानकर व्यास ने फिर से उससे कहा ''पुत्र, मैने बहुत पहले देवी भागवत की रचना की, जो मुक्ति दिला सकती है। उसे पढ़कर ज्ञानी बनो'' फिर वे उसके बारे में कहने लगे।

- क्रमशः

पिशाचिनी की अद्भुत भेंट

नगर के कोतवाल की कचहरी में निम्न श्रेणी का कर्मचारी था चमन। उसकी आमदनी चूँकि बहुत ही कम थी, इसलिए नगर में ही न रहकर पास ही के एक गाँव में रह रहा था। इस कारण उसे किराया भी बहुत ही कम देना पड़ता था। वह पुराने ज़माने का खपरैलों से ढका छोटा-सा घर था। परंतु कुछ ही सालों में उसने सस्ते दाम में वह घर खरीद लिया।

उस घर में वे जब से रहने लगे तब से उसकी पत्नी अनेकों तक़लीफ़ों का सामना करती हुई ज़िन्दगी गुज़ार रही थी। चमन सबेरे निकल जाता और रात ही को घर पहुँच पाता था। तब तक उसकी माँ कांता अपनी बहू को तरह-तरह से सताती रहती थी। बाक्-बाणों से उसके दिल को ठेस पहुँचाती थी। आपे से बाहर हो जाने पर बहू सुमति पर हाथ चलाने में भी हिचकिचाती नहीं थी। बार-बार ताने देती थी कि दहेज लाये बिना घर में राज चला रही है।

सास कांता घर के बीचों बीच बैठकर अगल-बगल की औरतों से अपनी बहू के ख़िलाफ जो मुँह में आता, बकती रहती थी। और उधर बहू सुमति घर का सारा काम-काज ख़ुद करती थी। जब रात हो जाती और काम पूरा हो जाता तब वह पति के आने तक पिछवाड़े के इमली के पेड़ के नीचे पलंग डालकर लेटी रहती थी।

एक दिन रात को कांता ने पेट भर खाने के बाद अपनी बहू से सारे बरतन मंजवाये, रसोई-घर को साफ़ करवाया और उससे कहा, "अब जा और इमली के पेड़ के नीचे की चारापाई पर पैर फैलाकर लेट जा! मेरे बेटे के आने तक सोना मत!" यों

- सी. कमला -

कहकर उसने उसे पिछवाड़े में ढकेला और दरवाज़ा बंदकर लिया।

सुमति सुतली बुनी चारपाई के एक कोने में बैठ गयी। सर्दी के कारण वह कांप रही थी। चारपाई के बीच-बीच में रस्सियाँ टूट चुकी थीं, इसलिए लेटना उससे हो नहीं पा रहा था। एक स्त्री पिशाचिनी अचानक वहाँ प्रत्यक्ष हो गयी। पर सुमति बिल्कुल डरी नहीं, क्योंकि राक्षसी सास के हाथों उसने कई यातनाएँ सहीं। अब भय नाम मात्र के लिए भी उसमें नहीं रहा। यह छोटी-मोटी पिशाचनी सास की तुलना में उसकी दृष्टि में कुछ भी नहीं। वह बिगाड़ेगी भी तो सास से ज्यादा क्या बिगाड़ सकेगी? इसलिए निर्भीक होकर वह बस उसे देखती रही।

"मैं पिशाचिनी हूँ", आँखें घुमाती, हाथ हिलाती हुई वह बोली। "यह भी कोई बताने की बात है? तुम्हें देखते ही जान गयी।" सुमति ने लापरवाही भरे स्वर में निधड़क कह दिया।

"मेरा नाम शांति है। मेरा निवास स्थल इमली का यह पेड़ है, जहाँ दिन-रात रहती हूँ।" पिशाचनी ने कहा।

सुमति ने पूछा, "मानवों में भी भय उत्पन्न करनेवाली इस अंधकार भरी रात में पेड़ से क्यों उतरी हो?" जानबूझकर उसने यह सवाल किया, क्योंकि जितनी जल्दी हो सके, उतनी जल्दी वह उससे मुक्त होना चाहती थी।

"तुमने बहुत ही अच्छा सवाल किया। तुम लोगों के इस घर में आने के पहले यहाँ शांति ही शांति थी। आराम से अपनी ज़िन्दगी काट रही थी। तुम्हारी चुड़ैल सास की गालियाँ सुनते हुए मेरे कान फटे जा रहे हैं। वह तुम्हें जब देखो सताती रहती है,

भला-बुरा कहती रहती है। आख़िर यह सब तुम्हें सहने की क्या ज़रूरत है? तुम मुँह सीकर चुपचाप क्यों बैठ जाती हो?" पिशाचिनी ने हमदर्दी दिखाते हुए उससे पूछा। उसने सलाह भी दी कि सास का विरोध डटकर करो।

"अरी शांति, विरोध करना, विद्रोह करना तुम्हारे कहे अनुसार किसी भी गृहिणी के लिए इतना आसान काम नहीं है। मेरे पति बहुत ही अच्छे और भोले-भाले आदमी हैं। दहेज लिये बिना ही मुझसे शादी की। उनकी माँ के खिलाफ़ उनसे शिकायत करके उनके मन को दुःखी करना नहीं चाहती। अगर तुम शांति चाहती हो तो यह पेड़ छोड़ दो और किसी दूसरे पेड़ पर चली जाओ।" सुमति ने कह दिया।

शांति ने कहा, "तुमसे बात करना बेकार है।

मेरी समस्या का परिष्कार तुमसे नहीं होगा। मैं स्वयं इसका उपाय ढूँढ़ निकालूँगी। तुम्हारी सास को दंड देकर ही रहूँगी। उसका मुँह बंद करके ही साँस लूँगी।'' फिर वह वहाँ से गायब हो गयी और कांता की खाट के पास प्रत्यक्ष हो गयी। उसने उसपर गरम हवा फूंकी।

''सर्दी के इन दिनों में इतनी गरम हवा कहाँ से चल रही है?'', कहती हुई कांता ने आँखें खोली। सामने खड़ी पिशाचनी को देखकर ज़ोर से चिल्ला पड़ी।

पिशाचिनी ने मुस्कुराते हुए कहा, ''डरो मत। मैं शांति हूँ। तुम्हारे साथ जो अन्याय हुआ है, उससे मेरा हृदय पिघल गया है। मैं तुम्हारा भला करने के लिए ही आयी हूँ''।

पिशाचिनी ने जब सहानुभूति प्रकट की.तो कांता की जान में जान आयी। उसने धीरज बांधकर कहा, ''बताना तो सही कि मेरे साथ क्या अन्याय हुआ? बताना, मेरी क्या सहायता करोगी?''

''तुम जैसी उत्तम व निर्मल मनवाली सासों के होने के कारण ही दुनिया अब भी यथावत् चल रही है। नहीं तो कब की यह मिट जाती। सर्वनाश हो जाता। दहेज न लाकर तुम्हारी बहू ने तुम्हारे साथ बड़ा अन्याय किया। यह उसका घोर अपराध है। मैं भांप सकती हूँ कि इससे तुम्हारे मन को कितना बड़ा धक्का पहुँचा होगा। तुम्हारा मन कितना दुःखी होता होगा।''

''अरी पगली, तुम क्या जानो, मुझपर क्या गुज़र रही है। इसीलिए तो उसे खूब सता रही हूँ। बात-बात पर उसे खरी-खोटी सुना रही हूँ। उसे उठने-बैठने भी नहीं देती हूँ। अच्छी हूँ, इसीलिए अब तक उसे मार नहीं डाला!'' कांता ने कहा।

''वाह, कितनी अच्छी बात कही कांता। पर देखो, बहू को मारने से या गाली देने से तुम्हें आखिर मिलता क्या है? मेरे पास तीन अद्भुत वस्तुएँ हैं। उनमें से एक तुम्हें दूँगी। आगे कभी भी पैसों की कमी महसूस नहीं करोगी।'' पिशाचनी ने आश्वासन देते हुए कहा।

उसकी बातें सुनते ही कांता उठ बैठी। बोली, ''फिर देरी किस बात की? दिखाना, वे वस्तुएँ हैं क्या?''

पिशाचिनी ने गुलाबी रंग के एक तौलिये की सृष्टि की और कहा, ''अपनी बहू को स्नान कराना और इस तौलिये से उसका सिर पोंछना। पानी की एक-एक बिंदु मोती बनकर टपकेगा और तुम्हारे पैरों के सामने मोतियों का ढेर लग जायेगा।''

"कैसी बात कह दी तुमने। मैं उसको नहलाऊँ? यह हो ही नहीं सकता !" कांता ने तिरस्कारमय स्वर में कहा।

इस बार पिशाचिनी ने चांदी के रंग की कंघी की सृष्टि की और कहा, "यह कंघी अपनी बहू के बालों में चलाओ। कंघी में जो भी बाल अटक जायेगा, वह सोने की लता बन जायेगा।" कांता ने इस बार भी पिशाचिनी शांति का प्रस्ताव ठुकरा दिया और नाराज़ होती हुई बोली, "मेरी ठोंगों से उसके सिर के आधे बाल गिर चुके हैं। शेष थोड़े-बहुत जो बाल बच गये हैं, उनके कंघी में अटक जाने से मुट्ठी भर का सोना भी नहीं मिलेगा। मैं क़तई यह काम नहीं करूँगी।"

इस बार पिशाचिनी ने एक लाठी की सृष्टि की और कहा, "कांता, ध्यान से सुनो। बहू को एक गाली दो और फिर यह लाठी चलाओ। तब उसके हाथ में एक सोने की अशर्फ़ी दिखायी पड़ेगी। जितनी गालियाँ दोगी, जितनी बार मारोगी, उतनी अशर्फ़ियाँ तुम पाओगी।

कांता की आँखों में चमक आ गयी। उसने खुश होकर कहा, "यह चीज़ पहले ही मुझे दिखानी थी" कहती हुई उसने लाठी उसके हाथों से खींच ली। फिर उसने पिशाचिनी से कहा, "अब तुम यहाँ से चलती बनो। तुम्हारा काम ख़तम हो गया।"

कांता ने तुरंत उस लाठी की महिमा की परीक्षा करनी चाही। पिछवाड़े में चारपाई पर बैठकर ऊँघती हुई अपनी बहू को कर्कश स्वर में गाली दी, "अरी निगोड़ी, उठ। जब देखो, सोती ही रहती है।"

तुरंत उसके हाथ में पड़ी लाठी ऊपर उठी और उसी के सिर पर आ गिरी। उसे बड़ी चोट आयी। वह ज़ोर से चिल्ला उठी।

"सासजी, देखिये, मेरे हाथ में सोने की एक अशर्फ़ी आ गयी।" कहती हुई सुमति ने वह अशर्फ़ी उसे दे दी।

कांता भूतनी की बात समझ गई और बोली, "तुम्हारी यह निगोड़ी बस्तु मुझे नहीं चाहिए। इसे अपने ही पास रख।"

"यह शांति अपनी दी हुई चीज़ कभी वापस नहीं लेती। यह लाठी हमेशा तुम्हारे रसोई-घर में ही सुरक्षित रहेगी। बहू को गाली दोगी या मारोगी तो यह लाठी तुम्हारी ख़बर लेगी। सावधान !" पिशाचिनी ने कहा और वहाँ से गायब हो गई।

मजाकिया

बात बहुत पुरानी है। एक गाँव में एक मजाकिया था। वह सदा सबको अपने मजाकों द्वारा हँसा देता और सबका प्रियपात्र बना हुआ था। उसी गाँव में एक धनी किसान था। वह शिकार खेलने में बड़ा कुशल था। एक वर्ष खेत में कीड़े लगने से उसकी फ़सल ख़राब हो गई। इसी चिंता में वह बीमार पड़ गया।

यह ख़बर मिलते ही मजाकिया उस धनी को देखने गया और बड़ी व्यग्रता से बोला-''बाबू साहब! पहाड़ पर से बाघ आकर मेरे घर में घुस गया है। आप आकर कृपया उसे मार डालियेऔर हमको बचाइए।''

''मेरी सारी फ़सल ख़राब हो गई है। यही चिंता मुझे खाये जा रही है। ऐसी हालत में मुझे बाघ मारने को बुलाते हो ? और किसी को ले जाओ !'' धनी ने कहा।

मजाकिये ने आश्चर्य में आकर पूछा-''बाबू साहब ! क्या चिंता बाघ से भी भयंकर होती है?'' ये बातें सुनने पर धनी किसान का पौरुष जाग उठा, खाट पर से उठकर बोला-''अरे, बंदूक ले आओ।''

पर मजाकिये ने उसको रोकते हुए कहा-''बाबू साहब ! बाघ नहीं आया है। मैंने सिर्फ़ यह जानने के लिए झूठ कह दिया कि बाघ को मारनेवाले व्यक्ति चिंता के सामने कैसे झुक गये?''

धनी किसान हँस पड़ा; उस दिन से चिंता को छोड यथाप्रकार चलने-फिरने लगा।

चंदामामा प्रस्तुति

अजेय गरूड़ा

चित्र : फानि

सेनापति नरेन्द्रदेव गरूडा को पकड़ने में असफल रहा। नरेन्द्रदेव तथा उसके पुत्र रविन्द्रदेव ने मिलकर एक चाल खेली थी, जिसमें रविन्द्रदेव ने अपने को झंडे के खंभे पर लटका हुआ पाया और बहुत शर्मिन्दा हुआ। गरूडा एक नाव में बेहोश पाया गया और उसे राजमहल से आया गया। जब रविन्द्रदेव ने उसका मुखौटा खोला तो अपने ही पिता को देखकर दंग रह गया। राजा नए समझौते से खुश हुआ, जो काफी सफल भी रहा। इसका सारा श्रेय आदित्य को दिया गया। नरेन्द्रदेव के विरोध करने पर भी राजा ने आदित्य को नया प्रधानमंत्री बना दिया।

प्रधानमंत्री का घर। जब आदित्य अपने पिता से आशिर्वाद ले रहा था, तो उसे किसी आवाज ने बाधित किया।
आहा ! चील ! कुछ संदेशा अवश्य होगा।

यह रामसिंह ने भेजा था। रविन्द्र एक योजना बना रहा है कि जिससे नई नीति को गलत साबित किया जाए और गरूडा को इसका कारण।

यह कौनसा समाचार लेकर आ रही है?
जैसे ही वह पत्र पढ़ रहा था, उसने अरुणा को भीतर आते देखा।

बधाई हो आदित्य !
धन्यवाद अरुणा ! आजकल तुम कहाँ हो ?

मैं आजकल नए स्थापित समूह में रामसिंह की देखभाल में रह रही हूँ। लेकिन...
...रविन्द्रदेव के आदमी वहाँ भी परेशान कर रहे हैं। हम लोगों ने यह भी सुना है कि वह उसका पिता मिलकर कुछ खतरनाक योजनाएँ बना रहे हैं।
षडयन्त्र ?

जिससे कि हर तरफ बाधा पहुँचाई जाए।
और योजना ? जैसे कि...
सिपाही और अन्य लोग पड़ोसी राज्य से लिए जाएँगे।

...राजा और प्रधानमंत्री की हत्या और दोषी गरूड़ा! देखभाल करने के लिए राज्य की सारी बाग-डोर सम्भालना और दरबारियों को यह दिखाना कि वे राजा के प्रति इमान्दार हैं, उनको धोखा देना!

अच्छा हुआ कि तुमने मुझे बता दिया अरुणा !
यह पूर्णिमा की रात है और पूजा करना है।
अपना ध्यान रखना !

तुम्हारे पिता के शब्द मेरे कानों में अभी तक भी गूँजते हैं। तुम्हें जिसे चन्द्रपुरी की रक्षा के लिया चुनी गया और भगवान गरुड़ा तुम्हारी रक्षा करेंगे। अब मैं चलती हूँ।
जब से मैं भगवान गरूड़ की पूजा कर रहा हूँ यह मेरी सातवीं पूर्णमासी की रात है।...

हे भगवान गरूड़ !
आपके आशिर्वाद से मुझे अपने पिता के स्थान की रक्षा के लिए चुना गया है। अब आप ही इस देश को गद्दारों के हाथों से बचाएँ।

अभी उसने अपनी बात पूरी भी न की थी कि अचानक पूरा कक्ष रोशनी से भर गया।

आदित्य ने देखा कि पंख में से एक प्रकाश मूर्ति के पास आ रहा है।
आदित्य डरो मत ! तुम्हें कोई हानि नहीं पहुँचेगी !
मेरी छिपी हुई शक्ति तुम्हारी रक्षा तब तक करेगी, जब तक तुम उसका प्रयोग अपने स्वार्थ के लिए नहीं करते। बहादुरी से अपनी मातृभूमि की रक्षा करो !

जैसे ही उसने उस पवित्र आत्मा की आवाज को सुना आदित्य ने देखा कि पंख हवा में उड़ता हुआ बड़ा होता जा रहा है।
क्रमशः

बड़ा मुख्य कारण

हाल ही में सत्यवती का विवाह संपन्न हुआ। ससुराल जाने के पहले उसने अपनी सहेलियों से मिलना चाहा। कुछ सहेलियों से बिदा लेने के बाद वह दमयंती से मिलने जाना चाहती थी। तब सहेली सुगुणा ने उससे कहा, ''दमयंती घर पर नहीं है। तीन-चार दिनों के पहले किसी बात को लेकर पति-पत्नी में झगड़ा हो गया। दमयंती मायके चली गयी।''

यह सुनकर सत्यवती को बहुत दुख हुआ। उसे बहुत बुरा भी लगा। सिर झुकाकर सोचती हुई वह घर लौटी। उसने देखा कि उसके पिता खाट पर लेटे-लेटे कोई पुस्तक पढ़ रहे हैं और उसकी माँ तुरई काट रही है।

सत्यवती ने अपने माँ-बाप से दमयंती की बात बतायी और पिता से पूछा, ''पिताजी, मेरे समझ में नहीं आता कि भला क्यों पति-पत्नी बात-बात पर यों झगड़ते रहते हैं?''

सत्यवती के पिता ने पुस्तक बंद करते हुए कहा, ''बेटी, इसका मुख्य कारण है, सहनशक्ति की कमी और नाराज़गी अधिक।''

पति की बातें सुनते ही सत्यवती की माँ ने उसकी ओर देखते हुए नाराज़ी से भरे स्वर में कहा, ''क्या आप जानते हैं, दमयंती के घर में आख़िर हुआ क्या? बिना कुछ जाने ही मुँह में जो आया, बक देते हैं'' फिर वह उठकर अंदर चली गयी।

सत्यवती के पिता कुछ कहनेवाले ही थे कि इतने में सत्यवती ने मंद मुस्कान भरते हुए कहा, ''पिताजी, आपको कुछ भी कहने की कोई ज़रूरत नहीं। मैं सब समझ गयी।''

- गिरिजा.
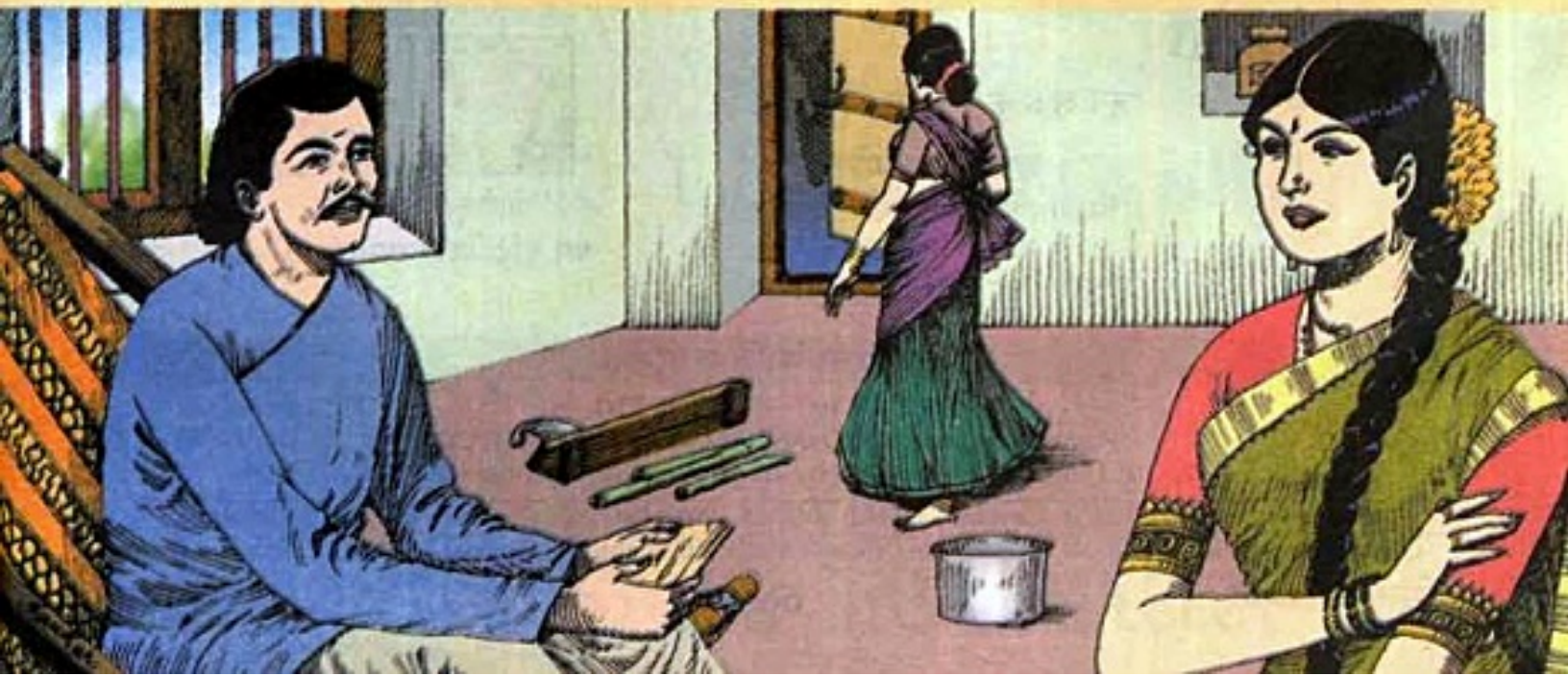
चित्र कैप्शन प्रतियोगिता

क्या तुम कुछ शब्दों में ऐसा चित्र परिचय बना सकते हो, जो एक दूसरे से संबंधित चित्रों के अनुकूल हो?

तुम एक सामान्य पोस्टकार्ड पर इसे लिख कर इस पते पर भेज सकते हो :

चित्र परिचय प्रतियोगिता, चन्दामामा,

प्लाट नं. ८२ (पु.न. ९२), डिफेन्स आफिसर्स कालोनी, इकाडुथांगल, चेन्नई - ६०० ०९७.

जो हमारे पास इस माह की २० तारीख तक पहुँच जाए । सर्वश्रेष्ठ चित्र परिचय पर १००/- रुपये का पुरस्कार दिया जाएगा, जिसका प्रकाशन अगले अंक के बाद के अंक में किया जाएगा ।

वधाइयाँ

जून अंक के पुरस्कार विजेता हैं :

हर्षवर्धन वार्ष्णेय
पि/ना. श्री चन्द्रशेखर वार्ष्णेय
६२०, गोलपाड़ा,
मथुरा - २८१ ००१, उत्तर प्रदेश.

"खेलो कूदो और नहाओ,
बल, बुद्धि और स्वास्थ्य बढ़ाओ।"

चंदामामा वार्षिक शुल्क

भारत में १२०/- रुपये डाक द्वारा
Payment in favour of CHANDAMAMA INDIA LIMITED
No. 82, Defence Officers Colony, Ekkatuthangal, Chennai - 600 097

Printed and Published by B. Viswanatha Reddi at B.N.K. Press Pvt. Ltd., Chennai - 600 026 on behalf of Chandamama India Limited, No. 82, Defence Officers Colony, Ekkatuthangal, Chennai - 600 097. Editor.: Viswam

CHANDAMAMA (Hindi) SEPTEMBER 2001 Regd. with RNI. No. 1087/57
Registered No. TN/Chief PMG-866/2001